TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | शनिवार 21 | अक्टूबर 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :33 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

भारत के संकल्पों को परिभाषित करती है नमो भारत ट्रेन : प्रधानमंत्री

पीएम मोदी ने साहिबाबाद में देश की पहली रैपिडेक्स ट्रेन का किया उद्घाटन

नई दिल्ली एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साहिबाबाद रैपिडेक्स स्टेशन पर दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर के प्रायोरिटी सेक्शन का उद्घाटन किया। उन्होंने भारत में रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम के शुभारंभ के साथ साहिबाबाद को दुहाई डिपो से जोड़ने वाली देश की पहली रैपिडेक्स ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाई, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि 'नमो भारत' में देश के भविष्य की झलक दिखती है। आने वाले १ साल में देश की पूरी रेल बदली नजर आएगी। उन्होंने कहा कि नमो भारत को दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान जैसे देश के अन्य हिस्सों से भी कनेक्ट किया जाएगा। इसकी आवाज हवाई जहाज की आवाज से भी कम और सुविधाजनक है। पीएम मोदी ने कहा कि यह ट्रेन नए भारत के संकल्पों को परिभाषित करती है। आज भारत की पहली रैपिड रेल सेवा 'नमो भारत' ट्रेन राष्ट्र को समर्पित हो रही है।

जिसका नाम 'नमो भारत' रखा गया है। इस दौरान

पीएम मोदी ने कहा कि लगभग चार साल पहले दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, रीजनल कॉरिडोर प्रोजेक्ट की आधारशिला रखी गई थी। आज साहिबाबाद से दुहाई डिपो तक उस हिस्से पर नमो भारत का संचालन शुरू हो गया है। उन्होंने कहा कि जिस योजना का हम शिलान्यास हम करते हैं, उसका उद्घाटन भी हम ही करते हैं।

उन्होंने कहा कि भारत का विकास राज्यों के विकास से ही संभव है। पीएम मोदी ने कहा कि तेज रफ्तार वाली नमो भारत मेड इन इंडिया ट्रेन है। प्लेटफार्म का स्क्रीन डोर के सिस्टम भी मेड इन इंडिया है। उन्होंने कहा कि नमो भारत, भविष्य के भारत की झलक है। पीएम मोदी ने मोबाइल से क्यूआर कोड स्कैन करके पहला टिकट खरीदा और ट्रेन में बैठे, जहां उन्होंने छात्रों से मुलाकात की। साथ ही उन्होंने ट्रेन स्टाफसे भी बातचीत की। वह नमो ट्रेन में बैठकर वसुंधरा सेक्टर-8 के मैदान पर पहुंचे। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और केंद्रीय शहरी विकास मंत्री हरदीप सिंह पुरी भी उपस्थित रहे।

मतदान की तैयारी में जुटा चुनाव आयोग उ प्र में 809 पोलिंग बूथ बढ़े

लोक पहल

लखनऊ। निर्वाचन आयोग लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट गया है। पोलिंग बूथों की संख्या बढ़ाने के साथ ही विषेष मतदाता पुनरीक्षण अभियान भी आगामी 27 अक्टूबर से शुरू होने जा रहा है। भारत निर्वाचन आयोग के अपार्टमेंट, गेटेड कालोनी व बस्तियों में पोलिंग बूथ बनाने के अभियान के तहत प्रदेश में 89 पोलिंग बूथ बढ़ गए हैं। प्रदेश में अब 1,62,012 पोलिंग बूथ हो गए हैं। यह बूथ 92 हजार से अधिक पोलिंग स्टेशन में बनाए गए हैं। पहले पोलिंग बूथ की संख्या 1,61,203 थी। पोलिंग बूथ बनने के बाद अब आयोग 27 अक्टूबर से शुरू हो रहे विशेष मतदाता पुनरीक्षण अभियान में जुट गया है। 27 अक्टूबर से नौ दिसंबर तक मतदाता बनाने के दावे व आपत्तियां ली जाएंगी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि एक जनवरी 2024 को 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाले युवाओं को मतदाता बनाने के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा। सभी मतदान केंद्रों पर विशेष कैंप लगाए जाएंगे। सभी बीएलओ अपने-अपने बूथ पर उपस्थित रहेंगे। मतदाता बनने के लिए आनलाइन वेबपोर्टल या फिर बीएलओ के माध्यम से सभी मतदान केंद्रों में फार्म-छह भरना होगा। मतदाता सूची से नाम काटने के लिए फार्म-सात व मतदाता सूची में दर्ज त्रुटिपूर्ण नाम सुधारने या फिर पता बदलने के लिए फार्म-आठ भरना होगा। 26 दिसंबर तक सभी प्रकार की त्रुटियों को दूर कर लिया जाएगा। मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन पांच जनवरी को होगा।

प्रदेश के बालगृहों की स्थिति जेलों से भी बदतर : हाईकोर्ट

बालगृहों में पौष्टिक भोजन, ताजी हवा और रोशनी की भी जरूरत

लोक पहल

प्रयागराज। जरूरतमंद, बेसहारा और संरक्षण के लिए बच्चों के लिए प्रदेष में बाल गृह संचालित किये जा रहे है। कुछ बालगृह सरकार द्वारा संचालित हैं जबकि कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे है। इन बालगृह की स्थिति को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने चिंता जाहिर की है। न्यायालय ने कहा है कि उप्र के बाल गृहों में रह रहे बच्चों को न तो पौष्टिक आहार मिल रहा है और न ही उन्हें खुली हवा में सांस लेने के लिए जगह। इतना ही नहीं, उन्हें सूरज की रोशनी की भी दरकार है। न्यायालय ने कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा है कि प्रदेष के बालगृह की स्थिति जेलों से भी बदतर है। यह मौलिक अधिकारों का हनन है। न्यायालय ने कमियों को तुरंत दूर करने के लिए निर्देश दिया है।

न्यायालय ने कहा है कि मामले की अगली सुनवाई पर सरकार बच्चों व बालगृहों की संख्या बताएं। साथ ही सुधार के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दें।

यह आदेश मुख्य न्यायमूर्ति प्रीतिंकर दिवाकर और न्यायमूर्ति अजय भनोट की खंडपीठ ने दिया है। न्यायालय ने सुधार के लिए कुल नौ बिंदुओं पर सुझाव दिए हैं। कहा है कि इनपर तुरंत अमल किया जाए।

न्यायालय ने कहा है कि न्यायमूर्ति के निरीक्षण में कई कर्मियों का पता चला। इस उदासीनता को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। न्यायालय कहा कि जब तक बालगृहों के लिए एक मानक नहीं बनाया जाता तब तक इनको ऐसी जगह स्थानांतरित किया जाए, जहां खेल के मैदान समेत बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हों।

न्यायालय ने कहा कि बालगृहों में तैनात पर्यवेक्षक या कर्मचारी प्रशिक्षित नहीं हैं। इससे बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। बच्चों के खाद्य पदार्थ सहित अन्य आवश्यकताओं के लिए कई वर्षों से बजट आवंटन में संशोधन नहीं किया गया है। इसका भी बच्चों के विकास पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। साथ ही न्यायालय ने कहा कि बालगृहों में शैक्षिक सुविधाएं बढ़ाई जाएं। व्यावसायिक प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था की जाए। बच्चों को आसपास के स्कूलों में दाखिला कराया जाए।

मानक के अनुरूप चल रहा है शाहजहांपुर का बालगृह: डीपीओ

शाहजहांपुर। जनपद शाहजहांपुर में राजकीय बालगृह बालक व राजकीय सम्प्रेक्षण गृह संचालित किये जा रहे हैं जिला प्रोबेशन अधिकारी गौरव मिश्रा ने बताया कि राजकीय बालगृह बालक में षिक्षा, खेल-कूद, स्वास्थ्य व मनोरंजन की सभी व्यवस्थाएं की गई हैं बच्चे बाहर के स्कूलों में पढ़ने जा रहे है और बालगृह परिसर में खेल-कूद, गतिविधियों का संचालन भी किया जा रहा है। बच्चों को सरकार द्वारा तय मीनू के अनुरूप भोजन व नाष्ता दिया ज रहा है। समय-समय पर उनका स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया जाता है तथा बालकों को व्यवसायिक परीक्षण भी दिया जाता है।

इस समय खतरे में है संविधान: अखिलेश

■ शाहजहांपुर में गरजे सपा सुप्रीमो, मोदी और योगी पर साधा जमकर निषाना
■ बोले-तीन मंत्री वाले जिले की हालत खराब

लोक पहल

शाहजहांपुर। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर में यहां आये सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने जहां एक ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व प्रदेष के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर जमकर निषाना साधा, वहीं कांग्रेस पर भी तीखा हमला किया। यहां तक कि उन्होंने कांग्रेस को धोखेबाज पार्टी तक कह दिया। सपा प्रमुख ने कहा कि इस समय संविधान पर सबसे बड़ा खतरा मंडरा रहा है।

उन्होंने कहा कि यदि भाजपा दोबारा आई तो हो सकता है हमारे वोट का अधिकार भी छीन ले। इसलिए हमारे सामने बड़ी चुनौती है, लंबी लड़ाई है। पिछले चुनाव में आया था तब भीड़ देखकर लगा कि सब सीटें जीत जायेंगे। मगर परिणाम आया तो जिले में हमारा खाता भी नहीं खुला। दरअसल, आपने तो जिताया मगर अधिकारियों ने हरा दिया। प्रदेश के वित्तमंत्री सुरेश कुमार खन्ना के ग्रह जनपद में उन पर तीखा हमला बोलते हुए पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि 9 बार के विधायक और जिले में तीन मंत्री होने के बावजूद शहर की हालत खराब है। गंदगी, टूटी सड़कें हैं। शहर की हालत बद से बदतर है। कहा कि प्रधानमंत्री ने झाड़ू लगाई, देश के नेता झाड़ू लेकर निकल गए मगर वो झाड़ू शाहजहांपुर में

नही लगती है।

उन्होंने कहा कि लखनऊ से यहां तक आए, डिवाइडर पर सांड दिखते रहे। यहां आते ही रोजा प्लांट की ऊंची चिमनी दिखी, यह भी नेताजी की देन है। नेताजी ने कोटाघाट पुल बनवाया, भाजपा वाले उसकी मरम्मत भी नहीं करा पा रहे हैं। एक्सप्रेस वे के नाम पर सबसे ज्यादा लूट भाजपा ने की है। रोजगार नहीं मिल रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यदि किसी विभाग में नौकरी निकली तो बिना पैसे किसी को नौकरी नहीं मिल रही। हमने पुलिस भर्ती में सिर्फ अंक पत्र मांगा, कहा कि दौड़कर दिखाओ, नौकरी ले जाओ। अब आउट सोर्स हो रही। अग्निवीर भी ऐसी ही भर्ती है। पार्टी नेताओं को नसीहत देते हुए सपा मुखिया ने कहा कि आपस की लड़ाई अब मत करना। लड़ते रह गए तो 24 छूट जाएगा। हमारी लड़ाई मंच पर हो सकती है पर क्षेत्र में नही। हम गठबंधन का हिस्सा है। मगर, हमें पीडीए नही भूलना है। पीडीए ही एनडीए को हराएगा। ये बात याद रखना। गठबंधन हमारी मदद नहीं करेगा, कार्यकर्ता करेगा।

आजम खां के साथ राजनीतिक कारणों से जुल्म हो रहा है। जो बड़े पदों पर हैं, उनके पास दो सर्टिफिकेट हैं। हम को पता सब है। हमे उम्मीद है, आजम खां जल्द बाहर आकर पार्टी के लिए काम करेंगे।

कांग्रेस ने मप्र में हमारे साथ विश्वासघात किया : अखिलेश

■ सपा मुखिया के कड़े तेवर: लोकसभा चुनाव में क्या अलग हो सकती है कांग्रेस और सपा की राहें?

लोक पहल

शाहजहांपुर। समाजवादी पार्टी के प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने यहां पहुंचे सपा के राष्ट्रीय अखिलेश यादव जहां एक ओर आजम खां को हुई सजा से आहत दिखाई दिए वहीं मध्य प्रदेश में समाजवादी पार्टी को कांग्रेस द्वारा एक भी सीट न दिए जाने से नाखुश भी दिखे। अखिलेश यादव के तेवरों से लगता है कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस व समाजवादी पाटी की राहें अलग भी हो सकती हैं। मध्य प्रदेश में कांग्रेस के एक भी सीट न छोड़ने से काफी नाराज दिखे सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि कांग्रेस ने पहले छह सीटें छोड़े जाने का आश्वासन दिया था लेकिन अन्तिम समय में उसने अपना इरादा बदल दिया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को आईएनडीआईए से पहले ही स्पष्ट कर देना चाहिए था कि गठबंधन सिर्फ लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय स्तर पर होगा प्रदेश स्तर पर नहीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री ने सपा नेताओं को देर रात तक अंधेरे में रखा और यह कहते रहे कि छह सीटों पर विचार किया जा रहा है लेकिन जब सूची जारी हुई तो सपा के लिए कांग्रेस ने एक भी सीट नहीं छोड़ी मजबूरीवश हमने वहां पर अपने मजबूत प्रत्याशियों को मैदान में उतार दिया है। आईएनडीआईए में यह बात पहले तय हो जानी चाहिए थी कि प्रदेश स्तर पर हमारा कोई भी गठबंधन नहीं होगा। मध्य प्रदेश में कांग्रेस के एक भी सीट न छोड़े जाने से खासे नाराज दिखाई दिए अखिलेश ने सख्त लहजे में कहा कि कांग्रेस दूसरे दलों को बेवकूफ बना रही है उसने जैसा व्यवहार हमारे साथ किया है वक्त आने पर हम भी उसके वैसा ही व्यवहार करेंगे। कांग्रेस ने गठबंधन में सीटे न देकर मध्य प्रदेश में हमारे साथ धोखा किया है अब अगर

उत्तर प्रदेश व केन्द्र के लिए भविष्य में गठबंधन की बात आयेगी तो हम भी विचार करेंगे। प्रशिक्षण शिविर के बारे में पूछे गए एक सवाल पर अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाएंगे। इनके माध्यम से पार्टी कार्यकर्ताओं को जागरूक कर उन्हें चुनाव के लिए तैयार किया जायेगा। आजम खां और उनके परिवार को न्यायालय द्वारा सुनाई गई सजा को लेकर अखिलेश यादव काफी आहत दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि आजम खां एक वरिष्ठ नेता है उनके व उनके परिवार के साथ अन्याय हो रहा है। भाजपा सरकार जानबूझकर उन्हें परेशान कर रही है। षडयंत्र के तहत बड़ी साजिश रचकर आजम खां और उनके परिवार को फंसाया जा रहा है उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता भली भांति जानती है कि इस सरकार में अगर कोई मुस्लिम है तो उसके साथ भेदभाव होना लाजमी है लेकिन राजनीति में किसी को भी इस स्तर तक नहीं जाना चाहिए। अखिलेश ने कहा कि उन्हें पूरी उम्मीद है कि आजम खां को न्यायालय से न्याय मिलेगा और वह जेल से बाहर आएंगे। तंज भरे लहजे में अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा के हुक्मरानों को कन्नौज में सांसद को पुलिस इंस्पेक्टर और सिपाहियों की पिटाई करते वीडियो वायरल होने के बाद भी उनको न तो कुछ दिखाई दिया और न ही उनके खिलाफ कोई कार्यवाही हुई बल्कि उनकी सदस्यता न चली जाए इसके लिए हल्की धाराएं लगाकर उन्हें बचा लिया गया। प्रदेश में डेंगू, मलेरिया और अन्य बीमारियों के चलते हो रही मौतों को लेकर पूछे गए एक सवाल के जवाब में अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं बदहाल अवस्था में है उन्होंने इसकी चर्चा विधानसभा में भी की थी। अस्पतलों में जब स्टाफ ही पूरी तरह से तैनात नहीं है तो वहां पर पूरा इलाज मिलने की कैसे उम्मीद की जा सकती है।

अंतरमहाविद्यालय फुटबाल टूर्नामेंट में एसएस कालेज बना विजेता

■ फाइनल में जीएफ कालेज को हराकर किया ट्राफी पर कब्जा
■ एमएलसी अंगद सिंह व स्वामी चिन्मयानन्द ने विजेताओं को किया पुरस्कृत

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद खेल महोत्सव में चल रहे अंतरमहाविद्यालय फुटबाल टूर्नामेंट के फाइनल मैंच में एसएस कालेज में जीएफकालेज को हराकर ट्राफी पर कब्जा किया। फाइनल मैच का उदघाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सदस्य विधान परिषद बाराबंकी अंगद सिंह ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया।

अन्तरमहाविद्यालयी फुटबॉल टूर्नामेंट के समापन के बाद मुख्य अतिथि एमएलसी अंगद सिंह व मुमुक्षु षिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द ने विजेता टीम को ट्राफी और पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। पुरस्कार वितरण समारोह का शुभारंभ अतिथियों के स्वागत से हुआ। डॉ कविता भटनागर ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि एमएलसी अंगद सिंह ने कहा कि आज खेल की परिभाषा बदल चुकी है। स्वस्थ शरीर में ही

स्वस्थ मस्तिष्क वास करता है।

मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि व्यक्ति अकेला कभी भी महत्वपूर्ण नहीं होता। समूह एवं संगठन ही उसको महत्वपूर्ण बनाता है। उन्होंने कहा कि शाहजहांपुर अशफाक, बिस्मिल और रोशन सिंह की धरती है लिहाजा यहाँ एकता एवं सदभाव की भावना का होना स्वाभाविक सी बात है।

महाविद्यालय के सचिव डॉ अवनीश मिश्र के द्वारा मुख्य अतिथि को अंगवस्त्र एवं प्राचार्य डॉ आर के आजाद ने स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। महोत्सव के दौरान हुई प्रतियोगिताओं की रिपोर्ट डॉ अजीत सिंह चारग ने प्रस्तुत की। डॉ कविता भटनागर के निर्देशन में हरियाणवी नृत्य सहित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि एवं मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती के द्वारा पुरस्कृत व सम्मानित किया गया।

अन्तरमहाविद्यालयी वॉलीबाल प्रतियोगिता में एस एस कॉलेज की छात्राओं की टीमविजेता रही। महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ अनुराग अग्रवाल के संचालन में हुए कार्यक्रम में महाविद्यालय के सचिव डॉ अवनीश मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में संयोजक डॉ प्रांजल शाही, डॉ जयशंकर ओझा, एसएसएमवी के सचिव अशोक अग्रवाल, डॉ अमीर सिंह यादव, डॉ प्रभात शुक्ला, डॉ आलोक सिंह, मेजर अनिल मालवीय, विश्वविद्यालय प्रतिनिधि एसपी सिंह, पर्यवेक्षक डॉ आलोक दीक्षित, डॉ संदीप अवस्थी, डॉ मृदुल पटेल, डॉ सुजीत वर्मा, मुकेश सिंह परिहार, डॉ अखिलेश कुमार, सुमित त्रिवेदी, डॉ रजत सिंह आदि उपस्थित रहे।

प्राथमिक विद्यालय तेरा में कराया गया कन्या भोज

शाहजहांपुर। प्राथमिक विद्यालय तेरा में ग्राम प्रधान एवं प्रधानाध्यापक की ओर से कन्या भोज का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को उपहार भी भेंट किये गए।

विद्यालय की बालिकाओं को भोज कराया गया। साथ ही प्रधानाध्यापक सरताज अली ने उपहार भेंट किए। इससे पहले हुए कार्यक्रम में प्रधानाध्यापक सरताज अली ने कहा कि बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक होना अतयंत आवश्यक है। संचालन सहायक अध्यापक दीपा पूनिया ने किया।

इस अवसर पर शिक्षा मित्र सारिका गुप्ता, राम नरायन, काजल, शिवांकी, रुनझुन, सोनम, साक्षी, दिव्या, जोया, उरूज, सिजा, उम्मुलखैर, नूर फतिमा, नीलम, प्रांशी, शालिनी, सिंकी, जूली, निकहत, हिबा, उम्मे साफिया, लायबा, उमरा, अनम, जास्मीन, अनविशा, लबीबा, इसरा, इकरा, सूफिया, अरीबा आदि छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

मुलाकात के बहाने कुनबे को एक सूत्र में पिरो गए अखिलेश

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। प्रशिक्षण शिविर के बहाने पार्टी कार्यकर्ताओं में जोश भरने शाहजहांपुर पहुंचे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पार्टी के पुराने नेताओं और पूर्व विधायकों के घर जाकर मुलाकात कर उनका कुशलक्षेम जाना और इसी बहाने सपा कुनबे को इकठ्ठा करने की कवायद भी की। आगामी लोकसभा चुनाव में एक-एक सीट महत्वपूर्ण है। समाजवादी पार्टी का शाहजहांपुर में सूपड़ा साफ हो चुका है। इसके चलते सपा मुखिया अखिलेष यादव कोई कसर छोड़ना नहीं चाहते। उन्होंने पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक (पीडीए) फार्मूले को जमीनी हकीकत में बदलने के साथ ही अगड़ी जातियों को साधने का पूरा प्रयास किया। उन्होंने पार्टी नेताओं के घर जाकर उन्हें साधने के साथ ही यह संदेश भी दिया कि पार्टी के लिए सभी नेता महत्वपूर्ण है।

दो दिवसीय दौरे पर यहां पहुंचने पर अखिलेश यादव का पूर्व एमएलसी जयेश प्रसाद व पूर्व एमएलसी अमित यादव 'रिंकू' आदि ने स्वागत किया। इस दौरान सपा नेता के साथ सेल्फी लेने वाले लोगों की होड़ लगी रही। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पूर्व विधायक राजेश यादव और पूर्व एमएलसी अमित यादव के कटिया टोला स्थित आवास पर पहुंचे और उनकी मां शकुन्तला यादव के पांव छू कर आशीर्वाद लिया। इस दौरान उन्होंने परिजनों से भी मुलाकात कर कुशल क्षेम जाना।

भाजपा सरकार में पीडब्ल्यूडी मंत्री जितिन प्रसाद के चचेरे भाई पूर्व एमएलसी जयेश प्रसाद के आवास पर पहुंचकर उन्होंने परिजनों के साथ सुबह का नाश्ता किया और हालचाल जाना। बता दें कि पिछले नगर पालिका चुनाव में जयेश प्रसाद की पत्नी नीलिमा प्रसाद ने भाजपा से चुनाव लड़ा था और उन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा था। इसके बाद पूर्व एमएलसी जयेश प्रसाद फिर से समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए थे। जयेश प्रसाद के घर काफी समय बिताकर अखिलेश अगड़ी जातियों को भी साधने का प्रयास किया।

सपा के जिलाध्यक्ष तनवीर खां के आवास पर पहुंचकर अखिलेश यादव ने उनके परिजनों से मुलाकात की और पार्टी में यह संदेश देने का प्रयास किया कि जिलाध्यक्ष के रूप में तनवीर खां उनकी पहली पसंद है।

अखिलेश यादव पूर्व विधायक अवधेश कुमार वर्मा के सेठ इन्क्लेव स्थित आवास पर पहुंचे जहां उनका स्वागत किया गया। चूंकि अवधेश वर्मा ददैराल विधानसभा क्षेत्र से आते हैं और वहां से विधायक रह चुके हैं ऐसे में अवधेश वर्मा के घर पहुंचकर अखिलेश यादव ने सपा के संस्थापक रहे स्व. राममूर्ति सिंह वर्मा की पुत्रवधू व महापौर अर्चना वर्मा और उनके पति राजेश वर्मा को एक बड़ा संदेश देने का प्रयास किया है। बता दें ददरौल से पिछला विधानसभा चुनाव समाजवादी पार्टी से लड़ने वाले राजेश वर्मा व उनकी पत्नी महापौर अर्चना वर्मा नगर निगम चुनाव में समाजवादी पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हो गई थी। इसके उपरांत सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष गांधी फैज-ए-आम कालेज के प्रबंधक सैयद मोइनुद्दीन मियां के बंगला सरोदी स्थित आवास पर पहुंचे, यहां उनका स्वागत मुरादाबाद से सपा सांसद डा. एसटी हसन सहित कई वरिष्ठ नेताओं ने किया।

अन्तिम समय में कार्यक्रम बदलते हुए अखिलेश यादव पूर्व विधायक रोशन लाल वर्मा के निगोही स्थित आवास पर भी पहुंचे। उन्होंने अवधेश वर्मा और रोशन लाल वर्मा को तवज्जो देकर जिले की लोध बिरादरी को सकारात्मक संदेश देने का प्रयास किया। इतना ही नहीं अल्पसंख्यक समुदाय के एक और नेता व पार्टी अल्पसंख्यक सभा के प्रदेश महासचिव सैयद रिजवान के ताजूखेल स्थित आवास पर पहुंचकर उन्होंने हालचाल जाना। पार्टी नेताओं के घर चाय पर चर्चा कर अखिलेश ने साफतौर पर यह संदेश देने का प्रयास किया है कि उनके लिए पार्टी के सभी वर्ग, बिरादरी और समुदाय के नेता महत्वपूर्ण हैं और आपसी गुटबाजी को छोड़कर सभी आगामी लोकसभा चुनाव की तैयारियों में पूरे मनोयोग से जुट जाए। शिविर के दौरान अखिलेश ने यह महसूस किया कि शाहजहांपुर में पार्टी के कार्यकर्ता तो पार्टी के प्रति वफादार और एकजुट है लेकिन नेताओं में आपसी खींचतान चल रही है। अखिलेश ने बड़ी बारीकी से नेताओं के बीच चल रही खींचतान को दूर कर उन्हें एकजुट करने का पूरा प्रयास किया है। वह जहां भी गए उस नेता को साथ लेकर अगले नेता के घर पहुंचे।

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष नीतू सिंह व उपेन्द्र पाल सिंह के आवास पर जाकर मुलाकात की। सपा के पूर्व विधायकों और वरिष्ठ नेताओं के घर जाकर मुलाकात कर सपा मुखिया ने जहां एक ओर अपने कुनबे को इकठ्ठा करने का काम किया है वहीं वह इन मुलाकातों से जातीय समीकरण को भी साधते दिखाई दिए। सपा मुखिया की मुलाकातों और शहर के नेताओं को दी गई तरजीह से एक बात साफ हो गई है कि आगामी लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी मुस्लिम, यादव दलित, और किसान गठजोड़ को लेकर मैदान में उतरेगी।

सुर्पनखा की कटी नाक देखकर रावण आपे से बाहर, किया सीता हरण

ओसीएफ रामलीला प्रदर्शिनी में उमड़ रही है दर्शकों की भीड़

लोक पहल

शाहजहांपुर। ओसीएफ रामलीला में ऑर्डिनेंस ड्रैमेटिक क्लब के अनुभवी कलाकारों द्वारा मंचन में दर्शाया गया कि रावण की बहन सुर्पनखा की नाक कट जाती है और वह इस अवस्था में अपने भाई रावण के पास जाती हैं और किस तरह से उसके नाक कान काटे गए सारा हाल अपने भाई रावण को सुनाती है यह सब सुनकर रावण बहुत ही क्रोधित होता है अपनी बहन सूपनखा से पूछता है क्या तुम खर, दूषण, त्रिसिरा के पास नहीं गई, जिस पर वह कहती है कि हम उनके पास गए उनको सारा हाल बताया जिस पर घोर संग्राम हुआ लेकिन उन तपस्वी बच्चों ने उन सभी को मार डाला। जिस पर रावण आश्चर्यचकित रह जाता है और सोचता है कि अब नारायण अवतार हो चुका है मेरे पाप इतने बढ़ गए हैं कि अब पीछे हटना मुश्किल है मैं अपने कार्यों को ऐसे ही रखूंगा और श्री नारायण से बैर रखूंगा और अपना व अपने परिवार का मोक्ष श्री नारायण के हाथों से ही दिलाऊंगा और अपने मामा मारीच के पास जाता है और उनके साथ मिलकर एक योजना बनाता है राम और लक्ष्मण से अपनी बहन का बदला लेने के लिए वह सीता को हरण कर लेता है जब रावण सीता का हरण करके अपने रथ में लेकर जा जाता है तो माता रो रही थी उनकी आवाज सुनकर जटायु जी सीता को छुड़वाने रावण

के पास आ जाते हैं और रावण से युद्ध करते हैं। इधर प्रभु श्री राम माता सीता की खोज वन में कर रहे होते हैं उन्हें रास्ते में जटायु मिलते हैं जटायु उनको सारा हाल बताते हैं और प्रभु श्री राम की गोद में अपने प्राण त्याग देते हैं। प्रभु श्री राम माता शबरी की कुटिया तक पहुंच जाते हैं माता शबरी प्रभु को देखकर प्रसन्न हो जाती हैं शबरी की वर्षों की तपस्या पूर्ण होती हैं प्रभु श्री राम को माता शबरी मीठे बेर खिलाते हैं। और फिर सीता की खोज के लिए आगे बढ़ जाते हैं रास्ते में उन्हें हनुमान मिलते हैं। इस प्रकार राम हनुमान का मिलन होता है हनुमान प्रभु श्री राम की मित्रता सुग्रीव से कराते हैं और फिर सीता की खोज करने आगे सभी लोग साथ में बढ़ते हैं !

इस मौके पर श्री रामलीला मंचन संयोजन समिति के अध्यक्ष एससी सिंह, सचिव रवि बाबू, निर्देशक पैट्रिक दास, देवेश दीक्षित, निर्देशक अंकित सक्सेना, महेंद्र दीक्षित, अरुण डी आर, रोहित सक्सेना, सतीश सक्सेना, राजीव सिंह आदि के साथ ऑर्डनेंस ड्रामाटिक क्लब के कलाकार व मंचन समिति के समस्त पदाधिकारी उपस्थित रहे। मंच पर रावण अंकित, सीता रानी, रोहित राम, देवेंद्र लक्ष्मण, मोहित हनुमान, अरशद विभीषण, प्रमोद बाली, सुभाष सुग्रीव, शिवी मंदोदरी आदि कलाकारों ने भूमिकाएं निभायी।

बाल विवाह को लेकर छात्राओं को किया जागरूक

लोक पहल

शाहजहांपुर। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना अंतर्गत कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय पुवायां में छात्राओं के साथ जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अम्रता दीक्षित द्वारा छात्राओं को बाल विवाह एवं बाल शोषण जैसे विषयों पर विस्तार से बताया गया। बालिकाओं को सुरक्षा एवं बाल अधिकारों पर जागरूक किया एवं बाल विवाह के दुष्परिणामों पर बालिकाओं को जानकारी दी।

बालिकाओं के जीवन में शिक्षा का महत्व बताते हुए कहा कि यदि हम शिक्षित होंगे तो, हम अपने अधिकारों के लिए जागरूक हों पाएंगे। इस मौके पर उन्होंने महिलाओं के लिए संचालित योजनाओं निराश्रित महिला पेंशन, वन स्टॉप सेंटर योजना, चाइल्ड हेल्पलाइन, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना आदि के बारे में बताया।

इस मौके पर केसवर्कर दिवाकर मिश्रा, अध्यापिका मधु गंगवार, स्मृति व अन्य स्टाफ मौजूद रहा।

डा.दीप्ति सक्सेना का साईन्टिस्ट के पद पर चयन

शाहजहांपुर। योग विज्ञान संस्थान की जिला इकाई द्वारा संचालित सीतापुर नेत्र चिकित्सालय योग साधना केन्द्र की योग साधक डा.दीप्ति सक्सेना का चयन यूपीएससी में डायरेक्ट्रेट आफ फेरेन्सिक साईन्स सर्विस में साईन्टिस्ट के पद पर हो गया है।

मोहल्ला ताजूखेल निवासी ओसीएफ इण्टर कालेज के रिटा. शिक्षक आरपी सक्सेना व मधुबाला सक्सेना की सुपुत्री डा. दीप्ति सक्सेना के चयन पर योग विज्ञान संस्थान की जिला इकाई की ओर से प्रधान डा. अवधेश मणि त्रिपाठी, मंत्री डा. इन्दू अजनबी व अन्य सदस्यों ने उन्हें अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की है।

डॉ इन्दु अजनबी को मिला क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खाँ स्मृति सम्मान

शाहजहांपुर (लोक पहल)। तुलसी-खुसरो साहित्य संगम मंच पटियाली, कासगंज के मेला मैदान में आयोजित अखिल भारतीय कवि दरबार मे कवि डॉ इन्दु अजनबी को क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खां सम्मान से अलंकृत किया गया।

इस अवसर पर एसडीएम कुलदीप सिंह, सीओ पुलिस एवं देश के ख्यातिलब्ध साहित्यकार लाल बत्ती, डॉ राधेश्याम मिश्र, संयोजक शरद कान्त मिश्र 'लंकेश', बलराम सरस, कमल कान्त तिवारी, श्रीमती साकेत कुलश्रेष्ठ, देवेन्द्र दीक्षित शूल, निर्मल सक्सेना समेत अन्य साहित्यकार उपस्थित रहे।

सीता की खोज में दर-दर भटके राम, सुग्रीव ने किया बाली का वध

खिरनीबाग रामलीला में राम सुग्रीव मित्रता, बाली वध व सीता खोज की लीलाओं का मंचन

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री रामलीला खिरनी बाग में नव चेतना कला परिषद के कलाकारों द्वारा शबरी भक्ति, राम सुग्रीव मित्रता, बाली वध एवं सीता की खोज की सुंदर लीला का मंचन किया गया। सर्वप्रथम सीता की खोज में राम और लक्ष्मण शबरी के आश्रम पहुंचते हैं जहां शबरी द्वारा उनको मीठे बेर खाने को दिए जाते हैं शबरी द्वारा ज्ञात होता है कि कुछ ही दूर पर ऋष्यमूक पर्वत है जहां पर सुग्रीव अपने साथियों के साथ निवास करते हैं वह आपकी सहायता अवश्य करेंगे। हनुमान से प्रथम मिलन एवं हनुमान द्वारा सुग्रीव एवं श्री राम की मित्रता हुई एवं जिस डर से सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था उसका कारण जानकर राम ने उसे शाम तक उसका राज्य एवं उसकी अर्धांगिनी को वापस दिलाने का प्रण किया। और सुग्रीव को बाली से लड़ने भेजा उसके बाद बाली का अंत कर सुग्रीव को उसकी अर्धांगिनी एवं राज्य अपने प्रण के अनुसार वापस दिलाया। सुग्रीव ने हनुमान अंगद के साथ समस्त वानर सेना को सीता की खोज के लिए चारों दिशाओं में भेज दिया। विभिन्न स्थानों पर वानर सेना ने हनुमान जी के

साथ माता सीता की खोज की। संपाती से ज्ञात हुआ कि सीता सात समंदर पार त्रिकूट पर्वत पर बसी लंका नगरी में एक बंदी के रूप में है। आज के मंचन में राम-सचिन, लक्ष्मण-अर्चित, हनुमान-अनिल, जामवंत-वेद प्रकाश, अंगद-आयुष, शबरी-विनीत, सुग्रीव-मनोज, बाली-मनोज, बन देवी-दीक्षा, सोनाली, प्रदुम्न, अभिनव, अमित आदि कलाकारों ने मंचन किया। आज की लीला में निर्देशन अनिल शर्मा राकेश श्रीवास्तव एवं विनीत सक्सेना ने किया मंचन की अध्यक्षता मनोज पटेल ने की। आज की महा आरती श्री दत्त शुक्ला, योगेश्वर शुक्ला, अनिल बाजपेई बांण, रवि गोयल, संगम गोयल, राकेश कपूर, क्षमा कपूर, बीना टंडन, कुशल टंडन, गरिमा टंडन, लक्ष्य टंडन, प्रमोद कपूर, नैना कपूर, हिमांशु मिश्रा, धर्मेंद्र वर्मा, कुलदीप सिंह दुआ आदि ने की। व्यवस्था में नरेंद्र मिश्रा गुरु, नीरज बाजपेई, मनीष खन्ना एवं नितेश गुप्ता आदि का सहयोग रहा। इस दौरान श्री रामलीला समिति के वीरेंद्र पाल सिंह यादव, विनोद अग्रवाल, चंद्रशेखर खन्ना उर्फ धीरू, राम मोहन वर्मा, अरुण खंडेलवाल, अतुल अग्निहोत्री, रोमी आनंद, मुकेश राठौर, ओपी वर्मा, संजीव राठौर, अनूप गुप्ता, अवनीश शर्मा आदि मौजूद रहे।

धरोहर

एक नन्हा गाँव था कभी 'चिनौर'

सुशील दीक्षित 'विचित्र'
शाहजहांपुर

अपने शहर में कैंट के किनारे एक नन्हा सा गाँव हुआ करता था चिनौर। चिनौर अब भी है लेकिन अब गाँव नहीं है। आप कभी फैक्ट्री स्टेट की डबल स्टोरी के पीछे से गुजरना शुरू करें तो अवंतीवाई की भव्य मूर्ति और उसके पीछे महानगरों जैसी एक विशाल कालोनी नजर आयेगी जो अपने दाएं बाएं कटे हुए चौराहों, तिराहों के अंदर करीने से बने भव्य मकानों को अपनी पीठ पर उगाये बहुत दूर तक चली जाती है। मानों अवंती बाई की के पीछे की मुख्य सड़क मुख्य तना है और चौराहे तिराहे उसकी शाखायें।

पिछली सदी के अंतिम दशक तक न मूर्ति थी और न यह खूबसूरत सम्पन्न बस्ती। इस सड़क पर तब आप गुजरते तो आप को खेतों बागों का अटूट सिलसिला नजर आता द्य आप जिद करके धूल भरी सड़क पर बढ़ते ही रहते तो मियांपुर गांव पहुंच जाते हैं। यह तीस वर्षों में धीरे धीरे उग कर अक्षय वट जैसी हो गयी नयी बस्ती चिनौर के नाम से पहचानी जाती है। अब तो इधर सड़कों एक जाल सा बिछा है जो सिंधौली तक जाता है लेकिन यह मूल चिनौर गाँव नहीं है। मूल गाँव मूर्ति के समानांतर गयी सड़क कैंट की भूमि की चाहरदीवारी से टकरा कर पुवायां की ओर मुड़ जाती है। इस सड़क के पूर्वी किनारे पर कदरन गहरी खाईं थी। मानों किसी किले की कभी पानी से आप्लावित रहने वाली परिघा हो। इसी के ठीक पीछे बसा है मूल चिनौर।

यह चिनौर कभी चित्तौर के नाम से छोटा ही सही लेकिन समृद्ध नगर था। इतिहास के अनुसार यहां शाहजहां के शासनकाल में राजा छब्बी सिंह का शासन था। यहीं उनकी गढ़ी थी, दिलेर खां ने जब हमला किया तब लोई, नैनिहार और चित्तौर के राजपूतों ने विकट संग्राम किया। राजपूत हार गए लेकिन उन्होंने ग्यारह हजार से अधिक अफ्गानों को मार गिराया। गढ़ियां को दिलेर खां ने जमीन में मिला दिया। युद्ध में मारे गए अफ्गानों के चित्तौर की गाढ़ी के किनारे दफ्ना कर कच्ची कब्रे बना दी गयीं। जब शहर का नाम बदल कर शाहजहांपुर हो गया और अफ्गानों के 52 कबीलों की जइयां और खेल (जई और खेल अफ्गान कबीलों के नाम है जो अभी भी अफ्गानिस्तान में हैं) बस गए तो ईद के दूसरे दिन सुबह अफ्गानी इन कब्रों पर जा कर फतिहा पढ़ कर गुलाब के फूल चढ़ा कर चादर चढ़ाते थे। धीरे धीरे इसने मेले का रूप ले लिया जो चिनौर का मेला कहा जाता था द्य धीरे धीरे वक्त की मार से बहुत सी कब्रें नष्ट हो गयीं। 1857 के संग्राम के बाद अंग्रेजों के हस्तक्षेप से यह मेला गदियाना मोहल्ला में लगने लगा। खिलाफ्त कमेटी ने बाद में इसे ईदगाह में स्थानांतरित कर दिया गया जो आज भी लगता है। चित्तौर चिनौर हो कर एक छोटे से गांव में बदल गया। पहले यहां प्रधानी थी लेकिन अब यह महानगर का हिस्सा हो कर महानगर जैसा विकसित हो गया है और आगे और होगा।

एस एस कालेज में खेल महोत्सव का शुभारंभ

- तालमेल, सहयोग, निष्ठा, अनुशासन, का उदाहरण हैं खेल : सीडीओ
- खेल प्रतिभा एवं व्यक्तित्व विकास का अवसरः स्वामी चिन्मयानंद

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में पांच दिवसीय खेल महोत्सव का शुभारंभ मुख्य अतिथि सीडीओ एस बी सिंह और मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद ने गुब्बारे उड़ाकर व शांति के प्रतीक कबूतर छोड़ कर किया। मुमुक्षु शिक्षा संकुल की सभी संस्थाओं की टीमों ने मेजर अनिल मालवीय के निर्देशन में मार्च पास्ट किया। डॉ कविता भटनागर ने कुलगीत एवं स्वागत गीत प्रस्तुत। एसएस कॉलेज के सचिव डॉ अवनीश मिश्र ने मुख्य अतिथि एस बी सिंह को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। एस एस कॉलेज के प्राचार्य डॉ आर के आजाद ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर जनपद के मुख्य अतिथि एसबी सिंह ने कहा कि विद्या वही है जो हमें संकीर्ण सोच, धर्म, लालच, अज्ञान, जाति आदि के बंधनों से मुक्त करे। हमें केवल साक्षर नहीं बनना है अपितु मानवीय मूल्यों की ओर बढ़ना है। उन्होंने कहा कि तालमेल, सहयोग, निष्ठा, अनुशासन, लगन एवं तन्मयता का सबसे अच्छा उदाहरण खेल है। स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि पांच दिन तक चलने वाले इस महोत्सव में खिलाड़ी अपनी प्रतिभा को उजागर करने का अवसर प्राप्त करेंगे। हमें अवसर का उपयोग करके व्यक्तित्व विकास का पूर्ण प्रयास करना चाहिए। हमें सदैव राष्ट्र की उन्नति के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिए। छात्र आयुष अवस्थी ने सभी टीमों को खेल शपथ ग्रहण कराई। कार्यक्रम में श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ की छात्राओं ने गरबा नृत्य प्रस्तुत किया। प्रथम दिन श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ के विद्यार्थियों के लिए 5 मीटर दौड़ एवं जूनियर व सीनियर वर्ग के लिए 800 मीटर दौड़ का आयोजन किया गया। 50 मीटर दौड़ में दक्ष सिंह ने प्रथम, अथर्व श्रीवास्तव ने द्वितीय एवं अर्ण श्रीवास्तव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 800 मीटर दौड़ जूनियर बालक वर्ग में स्वामी धर्मानंद सरस्वती इंटर कॉलेज के जय शंकर प्रसाद ने प्रथम, राम प्रताप ने द्वितीय एवं श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ के शुभम तिवारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 8 मीटर सीनियर बालक वर्ग में एस एस कॉलेज के विपिन सिंह ने प्रथम, अभिषेक शुक्ला ने द्वितीय एवं आकाश ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 8 मीटर सीनियर बालिका वर्ग में एस एस कॉलेज की संध्या ने प्रथम, उपासना ने द्वितीय एवं विधि महाविद्यालय की गीतांजलि सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।डॉ प्रांजल शाही के संयोजन में हुए कार्यक्रम का संचालन डॉ शिशिर शुक्ला ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ अजीत सिंह चारग ने किया। इस दौरान डॉ अनुराग अग्रवाल, डॉ जय शंकर ओझा, डॉ मेघना मेहंदीरत्ता, डॉ अमीर सिंह यादव, अशोक अग्रवाल, डॉ प्रभात शुक्ला, डॉ आलोक सिंह, डॉ मीना शर्मा, डॉ संदीप अवस्थी, एस पी डबराल, डॉ आदित्य सिंह, डॉ विजय तिवारी इत्यादि उपस्थित रहे।

/ सम्पादकीय /

एक ऐतिहासिक फैसला

समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने से इंकार करके उच्चतम न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। उच्चतम न्यायालय का फैसला भारतीय संस्कृति, भारतीय परंपराओं और भारतीयता की जीत है। अदालत का फैसला भारतीय जन भावनाओं की पुष्टि करने के साथ ही एक सख्त संदेष भी उन लोगों को देता है जो भारत का सामाजिक चरित्र बिगाड़ने की साजिष रच रहे हैं। यही नहीं हमारे धार्मिक, सामाजिक और नागरिक संगठन भी सराहना के पात्र हैं जिन्होंने संयुक्त रूप से भारतीय वैवाहिक और सामाजिक व्यवस्था को बचाने के लिए कानूनी लड़ाई लड़ी और उसमें विजयी हासिल की। उच्चतम न्यायालय के पांच न्यायाधीषों की पीठ ने अपना ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने से इंकार कर दिया। न्यायालय ने अपने आदेष में यह भी कहा है कि इस बारे में कानून बनाने का काम संसद का है। समलैंगिक विवाह को लेकर केंद्र सरकार ने स्पष्ट कहा था कि वह समलैंगिक विवाह के पक्ष में नहीं है, क्योंकि भारतीय परंपरा के अनुसार विवाह का अर्थ साथ रहने और वंशवृद्धि दरअसल, भारतीय पवित्र बंधन है। उससे जुड़े केवल दो लोगों का रहने का अधिकार नहीं है। अपनी मर्जी से विवाह हालांकि वहां भी विवाह के बीच संबंधों से जुड़ी ऐसे में सर्वोच्च न्यायालय

दो विपरीत लिंगी लोगों के करने की इजाजत देना है। समाज में विवाह एक अनेक रीति-रिवाज हैं। वह अपनी सहमति से साथ मगर संविधान दो लोगों को करने की इजाजत देता है। की परिभाषा स्त्री और पुरुष हुई है।

के लिए उसमें से कोई रास्ता निकालना कठिन था। इसलिए प्रधान न्यायाधीश ने ऐसे विवाह को कानूनी मान्यता देने से इनकार करते हुए कहा कि हम इससे संबंधित कोई कानून नहीं बना सकते। इस पर सरकारों को विचार करने की जरूरत है। इस संबंध में फैसला सुनाते हुए प्रधान न्यायाधीश ने जो बातें कहीं, वे बहुत मार्मिक और मानवीय हैं, जो समलैंगिकों के विवाह के अधिकार पर नए सिरे से सोचने को विवश करती हैं। उन्होंने कहा कि विवाह कोई अपरिवर्तनीय संस्था नहीं है। उसका स्वरूप अब काफी कुछ बदल चुका है। ऐसे में समलैंगिकों के बारे में भी नए ढंग से सोचने की जरूरत है। उन्होंने यह जिम्मेदारी सरकार पर छोड़ दी है।

दरअसल, हमारे समाज में समलैंगिकों को बहुत संकीर्ण नजरिए से देखा जाता रहा है। जबकि न्यायालय स्पष्ट कर चुका है कि उनमें भी सामान्य मनुष्य की तरह ही भावनाएं होती हैं। प्रेम और स्नेह की भावना दो लोगों में किस तरह पनपती है और वे साथ रहने का फैसला करते हैं, यह एक जटिल प्रक्रिया है। मगर अभी तक समलैंगिकों को समाज में उपेक्षा और प्रताड़ना ही मिलती रही है।

सर्वोच्च न्यायालय के पहले के फैसलों ने समलैंगिकों की भावनाओं को समझने की नई दृष्टि दी, जिससे कुछ हद तक उनके प्रति स्वीकृति बननी शुरू हुई है। समाज का नजरिया बदलेगा, तभी सरकार का नजरिया भी उदार हो सकेगा।

कैश फॉर क्वेरी इन पार्लियामेंट

किशन भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र और सबसे अधिक जनसंख्यकि यतंत्र वाला देश है जो हर भारतीय को गौरवविंत करने वाले दुर्लभ पलों में से एक है। परंतु वर्तमान स्थिति और 1951, 2005 के कुछ संसदीय घटनाओं को अगर हम देखते हैं तो, असमंजस में पड़ जाते हैं कि गर्व करें या दुर्भाग्यपूर्ण मानें? या नेंट कि जिन सांसदों को हम वोट देकर उन्हें चुनकर पवित्र संसद की दहलीज तक इस उद्देश्य से पहुंचाते हैं कि हमारे लोकसभा क्षेत्र के साथ-साथ पूरे राष्ट्र के विकास में हमारे प्रतिनिधि महत्वपूर्ण योगदान देंगे। संसद के प्रश्नकाल और शून्यकाल ध्यानाकर्षण काल में भी हमारे संसदीय क्षेत्र की कठिनाइयों के मुद्दे उठाकर हमारी समस्याओं को राष्ट्रीय स्तरपर संज्ञान में लेंगे और उच्च स्तरपर मिलकर उनका निदान करने में कोई कौर कसर नहीं छोड़ेंगे, परंतु जिस प्रकार से बिहार के एक सांसद द्वारा बंगाल की एक सांसद पर पैसे लेकर संसद में सवाल पूछने का मामला उठाया और लोकसभा अध्यक्ष को री इमरजेंस आफनैस्टी कैश फॉर क्वेरी इन पार्लियामेंट के टाइटल से चिट्ठी लिखी उसे सारा देश फिर एक बार स्तब्ध है, क्योंकि 25 दिसंबर 1951 में जब देश आम चुनाव भी नहीं हुए थे एक प्रोविजनल संसद बनाई गई थी उस समय भी एक सदस्य को धन लेकर एक बिजनेसमैन के लिए संसद में प्रश्न पूछने के आरोप में उसकी संसद सदस्यता समाप्त कर दी गई थी फिर 2005 में भी 10 लोकसभा और एक राज्यसभा सांसद की सदस्यता इसी मुद्दे पर समाप्त कर दी गई थी। अभी फिर एक बार यह मुद्दा आया है जो दुर्भाग्यपूर्ण है। बड़े बुजुर्गों की कहावत है के धुआं वहीं से उठता है जहां आग लगती है, वाली कहावत यहां जरूर चरितार्थ होते देख रही है। उधर बंगाल की उस संसद सदस्य और प्रख्यात उद्योगपति द्वारा खंडन कर दिया है।

स्पीकर को एक सांसद ने पत्र लिखकर स्पीकर से मांग की कि जांच के लिए कमेटी बनाई जाए और उन्हें सदन से निलंबित किया जाए। स्पीकर को 'री-इमरजेंस ऑफनेस्टी कैश फॉर क्वेरी इन पार्लियामेंट' टाइटल से चिट्ठी लिखी है। इसमें विशेषाधिकारों के गंभीर उल्लंघन, सदन के अपमान और आईपीसी की धारा 120 ए के तहत आपराधिक केस की बात कही है। अपने पत्र के साथ एक एडवोकेट की चिट्ठी भी लगाई है। इसमें लिखा है- ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने मेहनत से रिसर्च की है, जिसके आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि हाल तक उन्होंने संसद में कुल 61 में से करीब 50 प्रश्न पूछे। इनमें बिजनेस और उनकी कंपनी के व्यावसायिक हितों की रक्षा करने या उन्हें कायम रखने के इरादे से जानकारी मांगी गई थी। पहले भी ऐसा मामला सामने आया था। अपने पत्र में उन्होंने ये भी बताया कि 14वीं लोकसभा के दौरान 12 दिसंबर 2005 को भी ऐसा ही मामला सामने आया था। तब स्पीकर ने उसी दिन जांच कमेटी का गठन कर दिया था। साथ ही 23 दिसंबर 2005 को 10 सांसदों को 23 दिन के लिए निलंबित कर दिया गया था। इसी सदन ने 'कैश फॉर

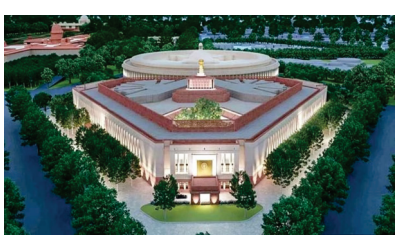

क्वेश्चन' मामले में 11 सांसदों की सदस्यता रद्द कर दी थी। आज भी यह चोरी नहीं चलेगी। बात अगर हम इस मुद्दे पर आरोपित संसद और बिजनेस मैन द्वारा द्वारा अपनी सफाई पक्ष रखने की करें तो,उन्होंने एक्स पर लिखा- फेक डिग्री वाले और एक पार्टी के कई नेताओं के खिलाफ विशेषाधिकार हनन के मामले लंबित हैं। अगर स्पीकर उन सबसे निपट लेते हैं तो मैं अपने खिलाफकिसी भी प्रस्ताव का स्वागत करूंगी। प्रवर्तन निदेशालय के मेरे दरवाजे पर आने और अन्य लोगों द्वारा एक उद्योगपति कोयला घोटाले में एफआईआर दर्ज करने का भी इंतजार कर रही हूं।

वर्ष 1951 के बाद से लोकसभा और राज्यसभा से 16 सांसदों की सदस्यता जा चुकी है। पहला मामला 25 सितंबर 1951 का है। संयोग ये सबसे पुरानी बड़ी पार्टी के ही थे। उनका नाम एचजी मुदगल था। उन्हें संसद में सवाल पूछने के एवज में पैसा लेने के कारण लोकसभा से हटाया गया। तब तक देश में पहला आमचुनाव नहीं हुआ था। देश में प्रोविजनल सरकार थी। उन्हें सवाल पूछने के लिए किसी बिजनेसमैन से धन मिला था। दिसंबर 2005 में 10 लोकसभा और 1 राज्यसभा सांसद की सदस्यता की सदस्यता रद्द कर दी गई थी, इन सांसदों पर आरोप था कि इन्होंने संसद में सवाल पूछने के लिए पैसे लिए थे। बर्खास्त सांसदों में सत्ताधारक पार्टी के छह, बीएसपी के तीन और कांग्रेस और आरजेडी का एक-एक सांसद शामिल थासबसे पहले राज्यसभा ने चर्चा के बाद छत्रपाल सिंह को बर्खास्त करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कर दिया। दूसरी ओर सांसदों को निष्कासन के प्रस्ताव पर लोक सभा में लंबी बहस चली थी। बाद में इस पर हुए मतदान का सत्ताधारी पार्टी ने वॉकआउट किया और उनकी अनुपस्थिति में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो गया। लोक सभा में यह प्रस्ताव सदन के नेता प्रणव मुखर्जी ने पेश किया। सदन के नेता प्रणव मुखर्जी ने प्रस्ताव पेश करते हुए कहा था कि हम सभी मानते हैं कि घूस लेने के मामले में कुछ किया जाए। उनका कहना था कि भारत सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और पूरा देश इस मामले पर नजरें गडाए हुए है। उन्होंने कहा कि हमें अन्य बातों से ऊपर उठकर सदन की गरिमा को ध्यान में रखते हुए फैसला लेना चाहिए। निष्कासन की जाँच कर रही पवन बंसल समिति ने मामले से जुड़े बताए जाने वाले 10 लोकसभा सदस्यों को सदन से निष्कासित करने की सिफारिश की थी, बता दें कि कई सांसदों पर पैसे लेकर सवाल पूछने का आरोप लगा था। उल्लेखनीय है कि एक टेलीविजन चौनल ने एक वीडियो टेप का प्रसारण किया था जिसमें विभिन्न राजनीतिक दलों के सांसदों को संसद में प्रश्न पूछने के लिए घूस लेते दिखाया गया था। संसद में सवाल पूछने के एवज में पैसा लेना दुर्भाग्यपूर्ण है।

अंतरिक्ष स्वच्छता में भी आत्मनिर्भर भारत

डा. शिशिर शुक्ला
शाहजहांपुर

हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के द्वारा अंतरिक्ष में मौजूद कचरे की सफाई के लिए एक अनूठा प्रयोग किया गया। जोकि पूर्णतया सफल रहा। पीएसएलवीसी-56 रॉकेट के द्वारा पहले सिंगापुर के सात् उपग्रहों को अंतरिक्ष में 536 किलोमीटर की कक्षाओं में स्थापित किया गया, तदुपरांत रॉकेट के बचे हुए हिस्से को 300 किलोमीटर की निचली कक्षा में वापस लाया गया। पृथ्वी की इस कक्षा में मलबा दो माह तक पृथ्वी का चक्कर लगाने के उपरांत स्वत: नष्ट हो जाता है। किंतु समस्या यह है कि अंतरिक्ष कचरे की अधिकतम मात्रा 500 किलोमीटर के आसपास वाली कक्षाओं में मौजूद है। पहले तो यह समझ लेना आवश्यक होगा कि वास्तव में अंतरिक्ष कचरा क्या है और यह हमारे लिए किस प्रकार से हानिकारक है। वास्तव में हर वह चीज कचरा होती है जो कि अब हमारे किसी उपयोग की नहीं रही। अंतरिक्ष शुरुआत से ही एक रहस्यमय विषय रहा है और आज भी है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ अंतरिक्ष के अध्ययन हेतु विभिन्न देशों के द्वारा अनेकों मानव मिशन तथा मानव रहित मिशन अंतरिक्ष में भेजे गए। इन सभी मिशनों की एक निश्चित कार्य अवधि होती है जिसके अंतर्गत ये अपने उद्देश्यों को पूर्ण करते हैं। इसके उपरांत इस मिशन से संबंधित सभी उपकरण, उदाहरणार्थ रॉकेट के टुकड़े, निष्क्रिय हो चुके उपग्रह, अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण इत्यादि सब कचरे का रूप ले लेते हैं। खास बात यह है कि यह कचरा पृथ्वी की उसी कक्षा में घूमता रहता है। जिस गति से अंतरिक्ष में शोध हेतु भेजे जाने वाले उपग्रहों एवं अन्य प्रक्षेपण यानों की संख्या बढ़ती जा रही है, उसी गति से अंतरिक्ष में कचरे की मात्रा भी विशालकाय रूप लेती जा रही है। निरंतर बढ़ता हुआ कचरा आज अंतरिक्ष में भेजे जाने वाले उपग्रहों पर खतरे का बादल बनकर मंडरा रहा है। अनेक घटनाएं ऐसी घटित होती हैं जोकि मानव जीवन के लिए अथवा महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भेजे जाने वाले सक्रिय उपग्रहों के लिए खतरा बन जाती हैं। वर्ष 2021 में 25 टन के चीनी रॉकेट का एक हिस्सा हिंद महासागर में मिला था। इसी

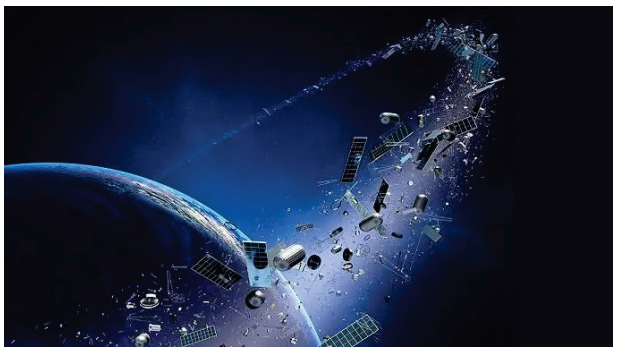

प्रकार नवंबर 2022 में चीन के रॉकेट का एक भाग प्रशांत महासागर में प्राप्त हुआ था। इतनी बड़ी मात्रा में महासागरों में अंतरिक्ष मलबे के गिरने से महासागरीय प्रदूषण में वृद्धि होने के साथ-साथ वहां का पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त समुद्री जीवों के लिए भी अंतरिक्ष से गिरने वाले मलबे के द्वारा एक बड़ा खतरा उत्पन्न किया जाता है। पृथ्वी की कक्षा में घूमते हुए अंतरिक्ष कचरे के ये टुकड़े परस्पर टकराते हैं, जिससे पुन: उनके कई टुकड़े हो जाते हैं और इस प्रकार कचरे की मात्रा बढ़ती जाती है। अब यदि इस कक्षा में कोई नवीन सक्रिय उपग्रह स्थापित किया जाता है तो उसके इन मलबे के टुकड़ों से टकराने की संभावना लगातार बनी रहती है। किसी सक्रिय उपग्रह का मलबे से टकराकर क्षतिग्रस्त होने का सीधा सा अर्थ है- संबंधित देश के करोड़ों अरबों के महत्वपूर्ण मिशन की एक ही झटके में बरबादी। आंकड़े बताते हैं कि विगत दशक में अंतरिक्ष में कचरे की मात्रा में 7500 टन की वृद्धि हुई है। वर्तमान में पृथ्वी की निचली कक्षाओं में 35000 से अधिक ऐसे टुकड़े मौजूद हैं जो 10 सेंटीमीटर आकार से बड़े हैं। इससे छोटे आकार के मलबे के टुकड़ों की संख्या तो करोड़ों में है। जहां एक तरफ पृथ्वी की कक्षाओं में कचरे के टुकड़े तैर रहे हैं, वही चंद्रमा की सतह पर भी अनेक निष्क्रिय हो चुके इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, मानव उपयोग की तमाम वस्तुएं कचरे के रूप में विद्यमान हैं। अंतरिक्ष कचरे की सफाई के रास्ते में तमाम चुनौतियां भी मौजूद हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि कचरा पृथ्वी की कक्षा में 24000 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से घूमता रहता है, जिस कारण इसे पहचान पाना और पकड़ पाना नितांत मुश्किल कार्य है। किंतु जिस गति से इस समस्या की भयावहता में वृद्धि हो रही है उससे निष्कर्ष यही निकलता है कि इसका तुरंत समाधान खोजने की आवश्यकता है। कचरे की सफाई के लिए एक तरीका यह प्रयोग किया गया है कि चुंबकत्व का उपयोग करके कचरे को पृथ्वी की कक्षा से उठाना और फिर उसे नष्ट करना, किंतु यह प्रयोग बहुत सफल नहीं है। इसरो के द्वारा किए गए प्रयोग में मिली सफलता के बाद अब यह उम्मीद की किरण जगी है कि भविष्य में हम अंतरिक्ष कचरे की सफाई हेतु किसी पर निर्भर रहने की बजाय स्वत: इस कार्य को पूर्ण करने में सक्षम होंगे।

पुरानी पेंशन एक राष्ट्रीय मुद्दा

मुनेश गोस्वामी

पुरानी पेंशन योजना को तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई की सरकार ने वर्ष 2004 में बंद कर दिया और इसके स्थान पर नई पेंशन स्कीम को बेहतर बात कर केंद्र सरकार में लागू किया था। जिसके 1 वर्ष पश्चात भारत के अधिकतर राज्यों ने 1 अप्रैल 2005 से नई पेंशन योजना को लागू किया जबकि भारतीय बैंक और भारतीय बीमा कंपनियों ने नई पेंशन योजना को 6 वर्ष बाद, वर्ष 2010 के बाद ज्वाइन करने वाले कर्मचारियों पर लागू किया। जबकि पश्चिम बंगाल में पुरानी पेंशन व्यवस्था पूर्व से ही लागू है। शुरूआत में इस पेंशन योजना का कोई विरोध प्रकाश में नहीं आया। क्योंकि उसे समय सेवानिवृत होने वाले सभी कर्मचारियों को पुरानी पेंशन का लाभ मिल रहा था। परन्तु 11 वर्ष के पश्चात वर्ष 2015 के बाद देश भर में जहाँ-जहाँ नई पेंशन योजना को लागू किया गयी थी। वर्ष 2022 में राजस्थान, छत्तीसगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, ने पुरानी पेंशन व्यवस्था को लागू कर दिया है। वहाँ इसका विरोध का विकराल रूप 1 अक्टूबर 2023 को रामलीला मैदान दिल्ली में दिखाई दिया, जहाँ लाखों कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया। इस वक्त केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के सभी कर्मचारी संगठन सरकार से सिर्फऔर सिर्फपुरानी पेंशन बहाल किए जाने की मांग कर रहे हैं । क्योंकि नई पेंशन योजना के तहत सरकारी कर्मचारियों को अपना भविष्य सुरक्षित नजर नहीं आ रहा है। उनका मत है कि सेवानिवृत्ति के बाद उनको बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। जिनसे निजात पाने का सिर्फ और सिर्फ एक ही साधन है, जो पुरानी पेंशन योजना को लागू किया जाना। नई पेंशन स्कीम पूर्ण रूप से शेयर बाजार पर आधारित है, जिसमें सेवानिवृत्ति के पश्चात कोई निश्चित पेंशन मिलने का नियम नहीं है। जबकि पुरानी पेंशन योजना में कम-से-कम 10 वर्ष सेवा करने वाले कर्मचारियों को भी 9000 प्रति महा की पेंशन प्रदान किया जाने का नियम है और सेवा पूर्ण कर सेवानिवृत होने वाले कर्मचारियों को अंतिम वेतन की 50प्रतिशत पेंशन महंगाई भत्ते के साथ देय है। निकट भविष्य में लोकसभा चुनाव 2024 के मध्य नजर रखते हुए । सभी वर्ग विभागों के राज्यों कर्मचारी और शिक्षकों एवं केंद्रीय कर्मचारियों ने अपने आंदोलन को त्वरित गति प्रदान की जा रही है। पुरानी पेंशन बहाल किया जाने का आगामी समय में लोकसभा चुनाव 2024 में एक उभरते हुए मुद्दे की तरह देखा जा रहा है।

कहीं बीत ना जाए रैना...

रानी प्रियंका वल्लरी
बहादुरगढ़ हरियाणा

जीवन का हर एक दिन आनंद से भरा होता हैं। आप अपने अंदर आनंद का उत्सव कैसे मनाते है यह आप पर निर्भर करता हैं। बाहर आनंद ढूंढ़ने से बेहतर है पहले हमें खुद को देखना चाहिए। इसे ढूंढ़ने में आप कितना समय लगाते हैं यह आप पर निर्भर करता हैं। कुछ समय रहते ढूंढ लेते हैं,तो कुछ को वर्षों बीत जाता हैं पर हासिल कुछ नहीं हो पाता।

दुनिया में तरह तरह विचारधारा के लोग हैं सबके जीने, कमाने, रहने का तरीका विभिन्न हैं। सब अपने काबिलियत के अनुसार अपना मेहनत करते हैं। वह अपने मंजिल तक पहुँच जाते हैं। तो कुछ लोग अपने भाग्य को दोषी ठहरा कर खुद भी ठहर जाते हैं। जो कम बौद्धिकता,कामचोरी को आँकता हैं। वह व्यक्ति वहीं ठहर कर नकारात्मक हो जाता है। वहीं से लोगों में कमियां और जलन जैसी बुद्धि घर कर जाती हैं। यह स्थिती जीवन में आगे बढ़ने का मार्ग बंद कर देता हैं। आप आजीवन किस्मत को कोसते रह जाते हैं। कोई भी कार्य समर्पण माँगता हैं। आज कल में टालने वाली बात का कल कभी आता ही नहीं।हर छोटे-छोटे काम को टालना मतलब खुद को धोखा देना है।

आप बात बात में झल्लाना शुरू कर देते हैं। नुकसान यह होता जो आपसे अपने से पराये तक आपके बदले स्वभाव देखकर दूरियां बढ़ाने लगते हैं। आपको यह प्रतिक्रिया देखकर क्रोध आता हैं। आप अपने अंदर ना जाने कितनी गलतफहमियां पाल लेते हैं। जिससे आपका स्वास्थ्य भी खराब रहने लगता हैं।हर तरफ से नुकसान फिर से बात आपके किस्मत पर आकर लटक जाती हैं। सकारात्मक रहिए। हर व्यक्ति अपने मंजिल को पाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहा हैं। जिसे अपना लक्ष्य दिखता है उसे आस पास बड़ी से बड़ी घटना भी नजर नहीं आती। अगर नजर इधर उधर जायेगी तो फिसल कर गिर भी सकता हैं। इसलिए जब भी आप अपने लक्ष्य को लेकर चलते हैं तो यह मत सोचिए जो आपको कौन देख रहा हैं।कौन सुन रहा हैं, या कौन क्या कह रहा हैं।

गुनगुना लीजिए थोड़ा वही अमर प्रेम फिल्म का गाना राजेश खन्ना और शर्मीला जी के अंदाज में कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम हैं कहना,छोड़ो बेकार की बातों में बीत ना जाए रैना....।

इंतजार किस बात की अपने लक्ष्य के लिए धैर्य और कर्म को अपने तरकश में लेकर चलिए। नेपोलियन हिल ने कहा है - 'इंतजार मत करिए क्योंकि सही समय कभी नहीं आता'।

अपने स्वभाव पर नियंत्रण रखना बेहद जरूरी है। सफलता पाने के लिए दोस्ती का दायरा बढ़ाइए। कटुता कहने से बचिए। आपने देखा होगा या महसूस किया होगा कई बार कुछ लोग देखने में भले ही आकर्षित ना हो पर वह नायाब नगीने से होते हैं। मनुष्य का स्वभाव भी ऐसा ही होना चाहिए। जो व्यक्ति आपसे मिले वर्षों आपके व्यवहार को अपने हृदय में नायाब नगीने सा बसा कर रखे।

खुला आकाश

उदास दरवाजे को
कैसे समझाऊँ,
खुशियाँ हमेशा
दस्तक नहीं देती।
हाँ उसका अस्तित्व
अब भी
फिज़ाओं में है,
क्योंकि वह
छोड़कर गया है,
मेरे लिए
मुट्ठी भर,
'खुला आकाश'।

राजश्री सिन्हा
बुल्गारिया

गीत घाटी हैं हम

हम हैं व्यथित कि जैसे हमसे
छूट गये हों सफर कई।

फूट गये हों कलश अनगिनत
जैसे अपनी प्यासों से।
या कि हुआ खिलवाड़ किसी के
मृग जैसे अहसासों से।

रहना दूर आँसुओं से तुम,
इस जल में हैं भँवर कई।

आकर बिंधा वक्ष में, ऐसे
किस-किस शर को याद करें?
किर्च हटायें या हम घर में
बिखरे पत्थर याद करें?

भरी दुपहरी में भी नभ में
आते बादल नजर कई।

फूलों तक के पास हँसी है,
चिड़िया तक खुश दिखती है।
पानी पर ही सही, धूप की
परी रोज कुछ लिखती है।

सुनो बुदबुदाहट फूलों की,
उन्हें मिले हैं अधर कई।

कानों में छूटा साबुन है
दुख, न फिक्र उसकी करना।
रहा पेड़ की आत्मकथा में
अक्सर किरनों का झरना।

घाटी हैं हम, गिरे जहाँ पर
टूट-टूटकर शिखर कई।

सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी
लखनऊ

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
बालोद छत्तीसगढ़

भिन्नता लघुकथा

मनोविज्ञान के सेवानिवृत्त प्रोफेसर शिखर कोल जी ड्राइंगरुम में सोफे पर बैठकर एक राष्ट्रीय दैनिक अखबार में प्रकाशित खबरों की जानकारी ले रहे थे। प्रथम पृष्ठ में देश की दूषित राजनीतिक प्रणाली पर आधारित खबरों को पढ़ते हुए उनकी नजर कुछ ऐसे शीर्षकों पर पड़ी कि वे हतप्रभ रह गये। वे पढ़ते जा रहे थे कि एक सड़क के किनारे चिंदी में लिपटी एक नवजात बच्ची की लाश मिली। तेरह वर्षीय बालिका का सामूहिक बलात्कार किया गया। अखबार के पन्ने उलटना उन्होंने जारी रखा। बीस वर्षीय विवाहिता को एक लोभी पति ने दहेज के लिए जिंदा जलाकर हैवानियत का परिचय दियाय जैसी खबरें उन्हें पढ़ने को मिली।

प्रोफेसर कोल जी को अखबार के अंतिम पृष्ठ में पढ़ने को मिला कि एक युवक ने अपनी माँ की उम्र की औरत को अपने हवस कि शिकार बनाया। एक बेटे ने सिर्फ एक एकड़ जमीन के लिए अपनी माँ और इकलौती बहन की टंगिया मारकर हत्या कर दी। उनकी नजरें अखबार की बारीक अक्षरों पर पड़ी ही थी कि उन्हें जयघोष का स्वर सुनाई दिया। अखबार को पकड़े हुए खिड़की से झाँककर देखा। बच्चे, जवान और बूढ़े सभी जयनाद कर रहे थे- 'दुर्गा मैया की जय, काली माई की जय, माँ बम्लेश्वरी की जय।'

लोग दुर्गा व काली की प्रतिमा पर पुष्पों की वर्षा कर रहे थे। रंग और गुलाल से वातावरण रंगीन हो रहा था। प्रतिमा-विसर्जन की यह छवि देखकर प्रोफेसर कोल जी उलझन में पड़ गये। उन्हें अखबार की पंक्तियाँ रह-रहकर याद आने लगी। तीस वर्ष तक मनोविज्ञान के प्रोफेसर रहे शिखर कोल जी औरत के विभिन्न रूपों के प्रति लोगों के व्यवहार की भिन्नता को समझ नहीं पा रहे थे।

गीत सूर्य संज्ञाएँ

धूम्र जैसी हो गईं हैं सूर्य संज्ञाएँ
हम उजासों को कहां से ढूंढकर लाएं।
है बुझा सा या कि सूखा ताल का चेहरा।
शुष्क तल को जल बताता भोर से कोहरा।
रश्मियां निर्जीव देतीं गंध को फांसी,
बन रहा अब रंग वाला गुलमोहर मोहरा।
बल्लरी पर विष छिड़कने के सतत अभियान,
अब सुवासों को कहाँ से ढूंढकर लाएं।
पीत मौसम सर्द आहें मौन मद में घोल।
क्षुब्ध वासंती में दुर्लभ कोकिला के बोल।
एक अंधड़ की दिशा में उड़ रहा उल्लास,
रक्त पी लेंगी हवाएं कौन दे उर खोल।
कुछ घिनौने स्वार्थों से तुल गए संबंध,
गर्म साँसे हम कहाँ से ढूंढकर लाएं।
झील कृत्रिम और गहरी किन्तु प्यासी मीन।
भागता जाता शहर चेहरा लिए गमगीन।
कर रहा वैभव उजाला आंख में जाला,
प्रेम का घनघोर अभिनय सिर्फझूठा सीन।
देखकर मुख नृत्य करना औपचारिकता,
ढोल ताशों को कहां से ढूंढकर लाएं।

कमल 'मानव'
शाहजहाँपुर

मां और बेटी

पांव नहीं पड़ते मेरे जमी पर जब मां
मुझे रानी बिटिया कहकर बुलाती है

लगती कितनी प्यारी है सुंदरता की मूरत है करें प्यार
मुझसे कितना मेरी मां अनुमान लगाना मुश्किल है

माना कि गरीब हूं मैं पर शहजादी जैसी रखती है
सूखी रोटी खुद खाती है घी चुपड़ी रोटी मुझे खिलाती है

नहीं चाहिए महल दो महले नहीं चाहिए ठाठ बाठ
मैं रहती हूं अपनी मां के दिल में पलकों पर मुझे बिठाती है

रीतू चौरसिया
नई दिल्ली

मन लागो यार अमीरी में

राजेन्द्र वर्मा, लखनऊ

कबीर कभी गाया करते थेकृ मन लागो यार, फक्कीरी में !...

उस समय लोग फकीरी को आदर्श जीवन-शैली मानते हों, पर आज हमारा मन अमीरी में लग रहा है। फकीरी में मन लगाने के लिए घर-परिवार तक को छोड़ना पड़ता है, जबकि अमीरी में मन लगने पर फकीर टाइप के लोग अपना पल्ला खुद ही झाड़ लेते हैं।

फकीरी कभी दिल को सुकून देने वाली होती होगी काशी और मगहर में भेद न करती थी दो वक्त की रोटी और तन ढकने के कपड़ों के सिवाय देश-दुनिया के प्रपंचों से ज्यादा लेन-देन न रखती थी। तब चमचमाती गाड़ियाँ और सुघड़-सुन्दर नारियाँ देखकर आँखें बार-बार झपक कर दिल में हलचल न मचाती होय महँगे कपडे, घड़ियाँ, हीरे-जवाहरात जड़ी चौबीस कैरेट सोने की अँगूठियाँ, 5-जी मोबाइल, गैजेट्स कंकर-पत्थर के समान थे और हवेली-कोठियाँ, कोठीनुमा मकान या महँगे फ्लैट झोपड़ी के समान लगते थे। बस एक अनहद नाद हृदय में तृप्ति की गंगा बहाता रहता था लेकिन आज ऐसी फकीरी पूरी तरह से आउट ऑफफैशन हो चुकी है। आज वह अमीरी के रंग में रँग चुकी है। यह उपभोक्तावाद के रास्ते आती है। बेटा तो बेटा, बाप भी कितनी ही उपभोक्ता-वस्तुओं का गुलाम है। पत्नियाँ इतनी बेचौन हैं कि उनकी साज-सज्जा भ्रम उत्पन्न करती है कि वे अभी तक कुँवारी हैं या दो बच्चों की माँ! घर के बुजुर्ग की खोपड़ी में अगर बाल हैं, तो वे भी काले दिखते हैं। कपडे-लत्तों से भी वे जवान दिखते हैं। यही हाल बुजुर्गियों का है। ऐसे से सचमुच की फकीरी किसी से क्या सधेगी, अमीरी थोड़ी-बहुत जरूर सध सकती है। इसीलिए हर कोई अमीरी की साधना में होड़ करते हुए दत्त-चित्त से लगा हुआ है। और तो और, आध्यात्मिक सन्त भी इसी मार्ग में मन-क्रम-वचन से डटे है, भले ही उनमें से कितनों को जेल में जाकर साधना करनी पड़ रही हो।

लेकिन यह अकारण नहीं है। सनातनी सामंतवाद और पश्चिम से आई रहन-सहन और पढाई-लिखाई की शैली इस प्रकार के जीवन जीने की शिक्षा देती है। मध्य वर्ग से निकले आई.ए.एस., पी.सी.एस, डॉक्टर-इंजीनियर, अन्य अधिकारी-बाबू बन जाने के बाद जीवन का अन्तिम लक्ष्य है अमीरी की साधना। प्रेरक पूर्वजों से सबक लेते हुए ये पूरी तरह से काइयाँ और भ्रष्टाचारी बनकर अमीरी की साधना को अंजाम तक पहुँचा पाते है। उच्च वर्ग पहले ही पूँजीपतियों के घर जन्म लेते हैं और उसी समय ही अमीर बन जाते हैं। आगे चलकर उनके खून में अमीरी उबाल खाने लगती है। जाहिर है कि उनका भविष्य अमीरी से त्रस्त रहता है। उनकी आँखों में अमीरी का ऐसा माड़ा चढ़ जाता है कि उन्हें देश में कोई गरीब नजर नहीं आता और अगर कोई नजर आ ही जाए तो वे उसे आदमी ही नहीं मानते। झंझट खत्म ! देश के निम्न वर्ग के साथ यही सदियों से होता आया है। उनमें से कुछ जरूर ऐसे होते हैं जो मेहनत आदि के बल पर मध्य वर्ग में शामिल होते हैं और

एक दिन अपना कायाकल्प कर लेते हैं। इस तरह वे निम्नवर्ग की त्रासदी से पीछा छुड़ा लेते हैं। उनके रिश्तेदार आदि जो उनसे कुछ मदद की उम्मीद रखते हैं, वे बाकायदा निराश होते हैं और कुछ दिनों तक उन्हें कोसकर और गालियाँ देकर जल्द ही यह सोचकर चुप हो जाते हैं कि शायद वे उनके बच्चों के कुछ काम आ सकें।

देश के बँटने के साथ ही अमीरी भी दो भागों में बँट गई है एक राष्ट्रवादी और पूँजीवादी। राष्ट्रवादी अमीरी बैंकों से करोड़ों का कर्ज लेती है और कुछ सालों ऐश के साथ जिन्दगी गुजारने के बाद विदेशों की राह पकड़ती है। अपने अभियान के झंडारोहण से पूर्व ये विदेश आने-जाने का अभ्यास करते हैं और कर्ज का कुछ हिस्सा सरकार चलाने वाली पार्टी के फंड पर न्योछावर कर देती है। उसके बाद, कुछ दिनों के बाद जब उसे देश की नागरिकता दो कौड़ी की सिद्ध हो जाती है, तो सरकार की मिचमिचाई आँखों में उत्कोच की धूल झोंक विदेश में सेटेल हो जाते हैं। बैंक अपने कर्ज की वसूली के लिए अरण्यरोदन करते रहते हैं और सरकार साँप निकल जाने के बाद लकीर पीटने वाला कार्यक्रम चलाती रहती है।

आश्चर्यजनक किन्तु सत्य, आज अमीरों के ठाठ जीने वाले राष्ट्रपुरुष स्वयं को फकीर बताते हैं। ऐसी फकीरी पर भला कौन न मर जाए! यों राजनीति में तमाम अमीर जनसेवा के रास्ते और अमीर बनने को व्याकुल है, लेकिन राष्ट्रवादी फकीर की प्रेरणा से वे फकीर होना चाहते हैं, भले ही उन्हें राष्ट्र छोड़ना पड़े! वे ऐसा शायद इसलिए भी करते हैं क्योंकि यह देश तो फक्कीरों का ही देश रहा है। फिर, अमीरों का यहाँ क्या काम? अगर आँकड़ों पर भरोसा किया जाए तो पिछले चार-पाँच वर्षों में बीस-पचीस हजार अमीरों ने यहाँ की नागरिकता को गुड-बाई कर विदेशों में अपनी धाक जमा ली, क्योंकि यहाँ पूँजी-निवेश का माहौल ही नहीं है। उधर राष्ट्रपुरुष पूँजी-निवेश के लिए पचासों देशों में मारे-मारे फिर रहे हैं। उनके हिसाब से यहाँ पूँजी का अकाल पड़ा है। जितना धन राष्ट्रपुरुष की विदेश यात्राओं पर खर्च हुआ है, उतने में तो यहाँ दस-पन्द्रह कारखाने तो लग ही जाते और बेरोजगारों को दो वक्त की रोटी का इंतजाम हो जाता ! मगर यह आमिरजादी फकीरी का ऐसा कौल है जो अपने ऊपर गरीबों की छाया भी नहीं पड़ने देती, जुमलों से ही काम निकाल लेती है।

मध्य वर्ग तो पहले ही सत्ता द्वारा प्रायोजित फकीरी का लुत्फ उठा रहा है। मजे की बात यह है कि लेखकों-कलाकारों को भी इसमें कोई बुराई नहीं दिखती, व्यंग्यकारों को तो बिल्कुल नहीं। वे सत्ता के साथ खड़े होकर व्यंग्य लिख रहे हैं। लेकिन वे बेचारे सत्ता के साथ न खड़े हों तो किधर जाएँ? विपक्ष अब रहा ही कहाँ? वैसे भी जनता से कटे हर आदमी को आराम है, वह चाहे नेता हो, अधिकारी हो, या व्यंग्यकार ! जनता के हिस्से मगर वही पुरानीवाली फक्कीरी है। आदमी जब असहाय होता है तो अभावों में जीने का आदी हो जाता है। इतना समझौतावादी हो जाता है कि किसी गैर बाजिब बात पर उसका खून नहीं खौलता। ऊपर से समस्या यह कि अपनी अभावग्रस्तता को वह फक्कीरी का बाना भी नहीं पहना सकता। उसे भी अमीरों ने हाईजैक कर लिया है।

हम आप और रसोई

पान की खीर व्रत स्पेशल...

रेसिपी

मां दुर्गा को समर्पित नवरात्रि के व्रत चल रहे हैं मान्यता है कि सच्चे मन से देवी मां की पूजा करने पर सारी मनोकामना पूरी होती है। बहुत सारे लोग नौ दिनों तक व्रत भी रखते हैं और इन शुभ नौ दिनों के दौरान, कई दुर्गा भक्त उपवास रखते हैं। उपवास की अवधि किसी विशेष परिवार द्वारा अपनाई जाने वाली परंपराओं के आधार पर दो दिन से लेकर नौ दिन तक होती है। ऐसे में आज आपको बताएंगे कि शरीर में ऊर्जा बनाए रखने के लिए एक ऐसे पकवान की जो आपको पूरे दिन न केवल ऊर्जा प्रदान करेगा बल्कि भीतर से तरोताजा भी रखेगा। इस पकवान का नाम है पान की खीर, ये पान के पत्तों व गुलाब की पंखुड़ियों से बनाई जाती है। इसमें फाइबर, प्रोटीन, आवश्यक विटामिन और खनिजों से भरपूर मात्रा में मौजूद रहते है। साथ ही यह एक सात्विक आहार है और शरीर को अच्छी तरह से पोषण दे सकता है। पान की खीर एक ऐसी रेसिपी है जो आप नवरात्रि में माता रानी को भोग लगा सकते है । नवरात्रि के वर्त में भी खा सकते है। पान का भोग पूजा में किया जाता है इसलिये पान खीर माता को बहुत प्रिये है। पान खीर आप किसी भी वर्त में खा सकते है।

लता कपूर औलक
नई दिल्ली

विधि

चरण 1-पान के पत्ते, दूध पाउडर, चीनी, गुलकंद, गुलाब जल, दूध (2-3 चम्मच) लें। और मिक्सी में पीस लीजिए। **चरण 2**-दूध को उबाल आने तक उबालें, इसमें भीगे हुए सामक चावल डालें ओर चावल को मध्यम आँच पर पकाएं। **चरण 3**-दूध में पिसा हुआ मिश्रण डालें और तब तक हिलाएं जब तक कि यह एकदम गाढ़ा घोल न बन जाए और चावल भी अच्छे से पक जाना चाहिये। इसे पकने में 10-12 मिनट लग सकते हैं।आप चाहे तो इसमें खाने वाला हरा रंग मिला सकते है। **चरण 4**-पान खीर को ठंडा करें खीर ठंडी परोसने के लिए तैयार है। **चरण 5**-इसे मीठी चेरी, सूखे मेवे और गुलाब की पंखुड़ियों से सजाएं। आप पान खीर को किसी भी व्रत में खा सकते है।

सामग्री.....

500 ग्राम दूध
4 पीस पान पत्ता
2 बड़े चम्मच गुलकंद
2 बड़े चम्मच दूध पाउडर
3-4 बड़े चम्मच चीनी
3 बड़े चम्मच सामक चावल
3-4 बूंद केवड़ा जल
1/2 छोटा चम्मच गुलाब जल
कुछ सूखे मेवे काजू बादाम किशमिश पिस्ता आदि।
3.4 मीठी लाल चेरी
कुछ गुलाब की पंखुड़ियाँ

नोट-

1. मध्यम आँच पर पकाएं।
2. दूध को लगातार चलाते रहे नई वह जल सकता है।
3. खाने वाला हरा रंग आप की इच्छा पर निर्भर करता है।
4. दूध को लागातार चलाते रहे वरना दूध जल सकता है।

प्रकृति और नवदुर्गा नमो नम:

रेखा शाह आरबी
बलिया

समय के प्रारंभ में परब्रहम के दो भाग हुए- पुरुष और प्रकृति, पुरुष ने अपने आप को तीन भागों में विभाजित किया, सृजन करते भगवान ब्रह्मा, पालन करते विष्णु और विलीन करते महादेव। इन तत्वों को शक्ति प्रदान करने के लिए, प्रकृति ने अपने आप को तीन भागों में विभाजित किया..देवी लक्ष्मी ,देवी सरस्वती ,देवी दुर्गा ..इन तीनों शक्तियों के तीन तीन रूप बने ,जो तीनों प्रकार से पालन, सृजन, विलीन करते थे। इनके यह रूप ही नवदुर्गा है।

शैलपुत्री: नवदुर्गा का सबसे पहला रूप है, शैलपुत्री, जो पर्वतराज हिमालय की पुत्री थी इसलिए इन्हें शैलपुत्री तथा शारदा के नाम से भी जाना जाता है।

ब्रह्मचारिणी: नवदुर्गा का दूसरा रूप् है ब्रह्मचारिणी, ब्रह्म अर्थात तपस्या, चारणी अर्थात आचरण करने वाली माता ब्रह्मचारिणी रूप में हमेशा उत्तम फल देने वाली होती हैं।

चंद्रघंटा: तीसरा रूप है, 'चंद्रघंटा' मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चंद्र विराजमान है विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र से इनकी आठ भुजाएं सुशोभित और इनका तीसरा नेत्र सदैव खुला रहता है।

कुष्मांडा: नव दुर्गा का चौथा रूप है कुष्मांडा, दसों दिशाएं माता कुष्मांडा से ही आलोकित है माता इस रूप में जीवन का सृजन करती हैं तथा उनका यह रूप अत्यंत शीतल और कल्याणकारी है।

स्कंदमाता: पांचवा रूप स्कंदमाता, इनकी उपासना से मोक्ष का मार्ग सुलभ होता है देवासुर संग्राम में भगवान महादेव के पुत्र कार्तिकेय देवताओं के सेनापति थे, और इनकी माता ने असुरों का संहार किया। कार्तिकेय को स्कंध के नाम से जाना जाता है और इनकी माता होने के कारण देवी को स्कंदमाता कहां जाता है।

कात्यायनी: माता का छठवां रूप है कात्यायनी ,महिषासुर के संग्राम के लिए त्रिदेवो ने एक देवी को उत्पन्न किया। ऋषि कात्यायन ने सर्वप्रथम देवी की पूजा आराधना की थी, इसलिए देवी का नाम कात्यायनी पड़ा। देवी चार भुजाओं से सुशोभित और अत्यंत मंगलकारी हैं।

कालरात्रि: नव दुर्गा का सातवां रूप है माता कालरात्रि का, माता अत्यंत शुभ फल देने वाली हैं इन्हें शुभ फल देने के कारण शुभंनकारी भी कहा जाता है। माता कालरात्रि चारभुजा और तीन नेत्रों से सुशोभित है,इसी रूप में उन्होंने रक्तबीज का संहार किया था।

महागौरी: माता का आठवां रूप महागौरी, अत्यंत उज्जवल एवं ओजपूर्ण चमक लिए हुए हैं।

सिद्धिदात्री: माता का नवम रूप सिद्धिदात्री, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है सभी सिद्धियां प्रदान करने वाली, पुराणों के अनुसार स्वयं महादेव ने सिद्धियों की प्राप्ति के लिए माता सिद्धिदात्री की आराधना और तपस्या किए। इन्हीं सिद्धियों के प्रभाव से महादेव का आधा शरीर देवी का हो गया और वह अर्धनारीश्वर कहलाए माता की चार भुजाएं तथा वाहन सिंह है।

हे मैया माता रानी
तुमसा ना कोई दानी ,
तुम चर अचर की माता
हम मूरख अल्प ज्ञानी ,

प्रथम रूप शैलपुत्री
माता दे देना वरदान ,
जग में सब जीवों का
माई कर देना कल्याण ,

द्वितीय रूप ब्रह्मचारिणी
तुम उत्तम फल को देती ,
जो करता त्याग तपस्या
तुम उसकी सुधि हो लेती ,

तृतीय रूप मां चंद्रघंटा
जग में बजता है डंका ,
तुम रक्षा करना माता
मन में ना हो कोई शंका ,

चतुर्थ रूप कुष्मांडा
शीतल हो कल्याणकारी ,
माता अपनी ज्योति से
हरो दुविधा ,विपदा सारी ,

पंचम रूप स्कंध माता
असुरों का करती संहार ,
करो कार्तिकेय की जननी
जगजीवन पर उपकार ,

छठा रूप कात्यानी
ऋषि प्रथम पूजित ,
चारभुजा से अलंकृत
आभा करती चमत्कृत ,

सप्तम रूप है काली
शुभ हो फल की दाता,
तीन नेत्र है शोभित मैया
शुभ होता है शुभ नकरी ,

अष्टम रूप है गौरी
उज्जवल ओज धारे,
नाश करना तिमिर का
संकट से सहज पार उतारे ,

नवम रूप सिद्धिदात्री
तुम सिद्धि देती माता ,
जगत जननी महामाया
तुम सब हो सिद्ध ज्ञाता ,

तुम आओ द्वार हमारे
हम पलक पावडे पसारे ,
हम निरबुद्धि हैं माता
तुम हमको दे दो सहारे,

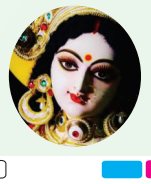

गजल

फन को अपने भी आजमाना है।
तुम जो रूठो तुम्हें मनाना है।

बाद मुद्दत के मिल रहे हैं हम,
सिर्फ तुम को गले लगाना है।

रात ये किस तरह से गुजरेगी,
बिन तुम्हारे जिसे बिताना है।

हाथ को चूमकर कहा उसने,
हमसफर आपको बनाना है।

खूब सुलझी लटों को उलझा लो,
खुद को इनमें मुझे फंसाना है।

पास आने का अब इशारा कर,
आज 'ऋतुराज' मुस्कुराना है।

विकास सोनी 'ऋतुराज'
शाहजहांपुर

चर्चा करें

धूप-किसने कैद की है
किस जगह,
आइए इस बात पर चर्चा करें।
आज के हालात पर चर्चा करें।

तेज जहरीली हवा के बघनखे।
नोंच लें बस
सामने जो भी दिखे।

ये हवा की शक्ल कैसी हो गई,
मौसमी उत्पात पर चर्चा करें।

दिख रहा है जो कभी ऐसा न था।
आदमी का रूप अब जैसा न था।

खिड़कियों से झाँकते भयभीत सब,
इस भयानक रात पर चर्चा करें।

गति विनाशी सोच षड्यंत्री हुई।
बच निकलने की कला है अनछुई।

चल पड़ीं शतरंज की सब गोटियाँ,
साफदिखती मात पर चर्चा करें।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

गिरगिट

इधर उधर जहाँ लपका गिरगिट,
कुर्सी से जा चिपका गिरगिट।
जिसका दुश्मन दोस्त उसी का,
वना सदा से खटका गिरगिट।
अंधे ने रेवड़ियाँ बाँटी,
उसी समय आ टपका गिरगिट।
स्वार्थसिद्ध हित निज दल को भी,
एक जोर का झटका गिरगिट।
हिंदू हित में काशी मथुरा,
मुसलमान को मक्का गिरगिट।
सभी जगह निज पैंठ बना ले,
ऐसी शातिर पक्का गिरगिट।
जन गण मन को करता आया,
अक्सर हक्का बक्का गिरगिट।

दिनेश रस्तोगी
शाहजहांपुर

दैवीय जीवंत प्रतिमा का रूप-माँ

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
राजिम छत्तीसगढ़

नवरात्री लगते ही भक्तगण माँ अम्बे, भवानी, दुर्गा जैसे विभिन्न रूपों की प्रतिमा का अलग दृ अलग दिन विधिदृविधानपूर्वक पूजा-अर्चना करते हैं। सामर्थ्य अनुसार माँ को श्रृंगार सामग्री, मिठाई व फल-फूल चढ़ाते हैं। पर उस प्रतिमा का क्या ? जो आज अपने ही घर में बेबस और लाचार पड़ी है। मेरा मतलब, अपनी ही जननी सेय जिसने हमें जाया है। यह सच है, आज भी कई माएँ वृद्धाश्रम में हैं, जो अपने बहू-बेटे व पोते-पोती की राह ताक रही हैंय और इस आस में बैठी हुई हैं कि उनके बेटे उन्हें लेने जरूर आयेंगे। नवरात्री में लोग जितनी सेवा व पूजा माँ की प्रतिमा का करते हैं, अगर उनकी आधी सेवा भी अपनी माँ के लिये करते, तो आज हर घर एक मंदिर बन जाता।

माँ अम्बे की प्रतिमा में माँ अम्बे विराजती है, लेकिन एक साक्षात प्रतिमा, जिसे दुनिया माँ के नाम से जानती हैय में पूरा ब्रम्हाण्ड विराजमान होता है। सिर्फमंदिर जाकर दान-दक्षिणा देने से ही माँ अम्बे खुश नहीं होती। अगर कोई माताराती को खुश रखना चाहते हैं तो सबसे पहले अपनी माँ को खुश रखना सीखें। अगर आप घर की माँ को खुश रखेंगे, तभी मंदिर की माँ खुश होगी। माँ अम्बे यह नहीं चाहती कि भक्त नौ दिन तक उनके द्वार ही आये, उनकी पूजा-अर्चना करे। नारियल, फल-फूल और मेवा चढ़ाये। माँ फल और मेवा की भूखी नहीं होती है। माँ तो केवल सच्ची सेवा, निश्छल भक्ति चाहती है। अगर सब मिलकर अपनी माँ को खुश करते, माँ की सेवा करते तो आज शायद पृथ्वी पर यह संकट नहीं आता। विचार करें कि आज इस दुनिया में कितनी सारी माँ वृद्धाश्रम में रहती हैं। रोते-बिलखते अपने बच्चों को याद करती हैं। उस माँ को कभी न तड़पाएँ, जिसने आपका पालन पोषण किया है। अमृत रूपी दुग्ध पान कराया है। आपको अपने हाथों से भोजन कराया है। माँ को भी अपने बच्चों से यही आशा रहती है कि जब वे बूढ़े हो जाएँगे तो ऐसे ही उनके बच्चे उनकी भी सेवा करेंगे। माँ तो माँ होती है न। अपने बच्चों के बारे में कभी गलत नहीं सोच सकतीं। लेकिन माँ को क्या पता कि वे बुढ़े होते ही बोझ बन जाएँगे। उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ आएँगे।

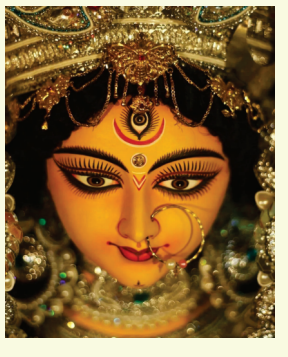

हर इंसान को यह समझना बहुत जरूरी है, जिस माँ ने हमें ऊँगली पकड़ के चलना सिखाया, उसे कतई बेसहारा न छोड़ें। वे बहुत खुशनसीब होते हैं, जिनके माँ-बाप उनके साथ हमेशा रहते हैं। अनाथ आश्रम के बच्चे अपने माता-पिता को देखने के लिए तरसते हैं। माता-पिता की कीमत उस गरीब अनाथ बच्चों से पूछें कि माता-पिता क्या होते हैं। बड़ा घर ,बड़ी गाड़ी , बंगला और पैसे रखने वाले ही अमीर नहीं होते। जिस घर में बूढ़े माँ-बाप की सेवा होती है, वह घर एक मंदिर होता है। आज अगर संसार मे माता-पिता को बोझ नहीं समझते , माँ अम्बे की तरह उनकी पूजा-सेवा करते, तो कहीं भी वृद्धाश्रमों की जरूरत नहीं पड़ती।

आज आप ऐसा करेंगे तो कल आपके बच्चे भी आपके साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगे। यूँ कहें, जैसे करनी वैसा फल, आज नहीं तो निश्चय कल। एज यू सो, सो यू रीप। बोये पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होय। है ना...? जय माता दी।

गंगा जमुनी तहजीब के संवाहक कवि ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

आतिश मुरादाबादी
मुरादाबाद

ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' से राब्ता कायम होने का एक अजीब किस्सा है, मेरा जिन अदबी महफिलों में उठना-बैठना रहता है। उन साहित्यिक महफ्लिों में ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' के शेर मेरे आस-पास से गुजरते रहते हैं। परन्तु जब मैंने एक आम आदमी के मुंह से यह शेर सुना तो मैं यकायक ठहर गया और सोचा कि एक शेर या दो मिसरो में पिता के दर्द को किस अंदाज में बयान किया है-

पिता का कौन समझे गम। पिता है सिर्फ एटीएम ।।

अदबी महफिलों में ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' के अतरंगी अंदाज में शेर कहने से एक खलबली मचा दी। ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' को करीब से जानने का सौभाग्य तब प्राप्त हुआ, जब आप आयुध निर्माणी नालंदा राजगीर, बिहार, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार से 30 सितंबर 2021 को सेवानिवृत होकर शाहजहांपुर आए। आपकी कठिन बात को आसान शब्दों में बयान करने की कला युवा पीढ़ी को अपनी ओर आकर्षित कर रही है और आपकी शायरी ने नई पीढ़ी को प्रभावित किया है। जब ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' को और ज्यादा जाना तो यह निष्कर्ष निकला कि ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' के अंदर एक दार्शनिक छुपा हुआ है। श्री ज्ञान के अंदर गंगा जमुनी तहजीब वास करती है। यही वजह है कि मैंने उन्हें दार्शनिक कहा है।

नफरतों को छोड़कर मिलते रहो दो-चार से, यूँ न तन्हा जी सकोगे बात को समझा करो।

श्री ज्ञान का क्षमाशीलता का भाव उनको औरों से अलग पंक्ति में खड़ा करता है, और श्रेष्ठता का निर्धारण करता है।

अब तो न गिला है, न शिकायत है किसी से, किस-किस ने हमें दर्द दिया भूल गए हैं।

श्री ज्ञान ने अपनी जिंदगी की सादगी को किसी नर्म लहजे में बयाँ किया है।

मैं आदमी भला हूँ, ये दावा नहीं किया। लेकिन कभी जमीर का सौदा नहीं किया।

श्री ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' को अंधेरी-काली रात को भी अपनी चमकदार सोच से रोशन करना भली भांति आता है। क्या-क्या शेर कहे हैं,

हमसे देखा न गया अंधियारा, देहरी पर चराग धर आए। 'ज्ञान' अफसोस जताएँ न दिये बुझने पर, उनको अब फिर से जलाएँ तो कोई बात बने।

श्री ज्ञान बहुत पढ़े-लिखे और ओहदेदार शख्सियत हैं आप आयुध निर्माणी में वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी पद से सेवानिवृत हुए हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रति पूर्ण समर्पित हैं। एक मुक्तक देखिए

सरल, सुबोध, सुगम्य, सभी भाषाओं में हिंदी भाषा। परिभाषित सारा जग जिससे, उसकी क्या हो परिभाषा। तुलसी, सूर, कबीरा की, आराध्य देवि है यह हिंदी, पुष्पित और पल्लवित होती रहे, यही है अभिलाषा।

श्री 'ज्ञान' की शायरी एक खूबसूरत बगीचा है। जिसमें भिन्न-भिन्न आकार की क्यारियाँ हैं जिसमें जिंदगी को महकाने वाले फूल हैं तो वही फूलों के

नीचे छुपे हुए कांटे भी हैं। इन फूलों पर तितलियाँ और भंवरे एक साथ विचरण करते हैं। श्री ज्ञान ने अपनी शायरी के उपवन को बहुत ही शानदार करीना से सजाया है।

सुधी पाठक श्री 'ज्ञान' की शायरी में अलग-अलग पहलू तलाश रहे हैं। इसका मतलब है कि एक बात का भिन्न-भिन्न परिपेक्ष में महत्वपूर्ण है। श्री ज्ञान को शायरी का एक चलता फिरता स्कूल कहा जा सकता है। ऐसा लगता है कि उन्हें जिंदगी ने बहुत दर्द दिया है। जिससे वह दुखी नहीं होते हैं बल्कि जिन्दगी का शुक्रिया अदा करते हैं और खुद को खुशनसीब समझते हैं।

दर्द देने का शुक्रिया उनका, वरना हमसे न शायरी होती। जो मिला है उसी में खुश रहकर, खुद को मैं खुशनसीब पाता हूँ।

पिता होना का फर्ज कुछ इस तरह निभाया है जिसका कोई सानी नहीं है।

खड़े हैं ज्ञान फिर भी वह, तुम्हारे साथ में हरदम।

ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' अपनी माँ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और अपना पुत्र होने का धर्म निभाते हुए लिखा है।

दुविधाओं में फंसकर जब भी मन मेरा मुरझाया है। माँ ने प्यार जाता कर मुझको हिम्मत दे दुलराया है। माँ के अनुशासन का फ ल है, जीवन जीना सीख लिया, सही गलत का निर्णय करना माँ ने ही सिखलाया है।

ज्ञानेंद्र मोहन ज्ञान ने शराब और मयखाने पर भी शायरी की है। उनकी शायरी राह से भटकने वाली नहीं अपितु मंजिल तक पहुंचने है।

मानता हूँ मयकशी से गम गलत होता नहीं, 'ज्ञान' फि र भी मुझको मयखाना पड़ा है देखना। मुझे बदनाम शायर का खिताबे आम है लेकिन गुजारी शाम अक्सर दोस्तों में चाय पीकर है।

आपने अपनी शायरी को किसी बंधन में नहीं बांधा बल्कि हर लहजे में शेर कहे हैं।

बेशक सही आप हैं, खुद अपनी नजर में, कुछ माइने तो रखती है दुनिया की नजर भी।

ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' ने कभी अपनी साहित्य साधना में साहित्यिक मूल्यों को नहीं छोड़ा और साहित्यिक मूल्यों के साथ ही साहित्यकार के रूप लम्बा सफर तय किया है। ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' की गजल और गीत की छः पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' की साहित्य साधना को दृष्टिगत रखते हुए समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान' ने प्रख्यात शायर दुष्यंत कुमार एवं अदम गोंडवी की विरासत को आगे बढ़ाया है और गजल को उर्दू से हिन्दी परिवेश में स्थापित करने में विशेष योगदान दिया है। आपने हिंदी साहित्य क्षेत्र में युवा कवियों की लम्बी फेहरिस्त तैयार की है। जो अपने आप में एक बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। 'ज्ञान' ने जिंदगी के हर उतार-चढ़ाव को न सिर्फ शायरी में ढाला, बल्कि उसका आनंद भी लिया है और श्रोताओं एवं पाठकों को भी आनंद का सुखद अनुभव कराया है। कुल मिलाकर 62 बसंत देख चुके ज्ञान जी अपनी साहित्य साधना में अनवरत क्रियाशील हैं। उनका अगला गजल-संग्रह 'कहो हे तथागत' और गीत-संग्रह 'ओ मेरे ऋतुराज' प्रकाशन की प्रक्रिया में हैं।

श्रापित सौगात

सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी

लघुकथा

'वाह दोस्त! वाकई मजा आ गया। मेरा कंठ तृप्त कर दिया है देखो पीने के बाद शरीर फुर्तीला हमारा दिल गार्डेन-गार्डेन हो गया। मयखाने पर छोटे-बड़े सभी बराबर हैं। जबसे विधायक जी ने अपना दारू का ठिका खुलावाया है। यहां के लोगों को पीने को दारू आसानी से मिल जाती है। भाई! विधायक जी की जेब रोज भरने की जिम्मेदारी हम सबकी है। यह ठिका देकर एहसान किया है।' पुत्तन बड़बड़ा रहा था। भूल्लो आई चिल्लाई - 'अरे! कलमुहे शराब ने पूरा दिमाग ही साफ कर दिया है। विधायक ने कोई सरकारी स्कूल या अस्पताल नहीं खुलवाया है की तारीफकर रहा है। बल्कि लोगों के दिमाग में उसने कचरा भरने की व्यवस्था की है और जिससे पूरा मुहल्ला कूड़ादान बना दिया है। अब पियक्कड़ो को प्यासा नहीं भटकना पड़ेगा।पी कर आबाद रहने की आशा न बचेगी।'

'सच में पहले मुहल्ला कितना अच्छा था। विधायक जी ने जीत के बाद हमको अच्छी सौगात दी।'-भूल्लो आई की बात सुनकर टिल्लू बोला।

तभी पुत्तन की सात साल की बिटिया खुशी बोली - 'सुनिए सब...हम बच्चों के लिए ये एक 'श्रापित सौगात' है जिसे ताउम्र भुगतना पड़ेगा।इसका उपयोग सदैव परिवार के लिए घातक होगा।'

बिटिया की बात सुनकर वहाँ अंतहीन स्यापा पसर गया।

विवाह के बदलते स्वरूप

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

विवाह, जिसे शादी भी कहा जाता है, दो लोगों के बीच एक सामाजिक या धार्मिक मान्यता प्राप्त मिलन, जो उन लोगों के बीच, साथ ही उनके और किसी भी परिणामी जैविक या दत्तक बच्चों तथा समधियों के बीच अधिकारों और दायित्वों को स्थापित करता है। या सरल शब्दों में कहा जाए विवाह एक ऐसी परंपरा है जो दो विपरीत लिंग,सोच, विचार, परिस्थिति, आचरण रखने वाले लोगों को एक सूत्र में बांधने का कार्य करता है।

एक विवाह के समारोह को विवाह उत्सव (वेडिंग) कहते है। विवाह मानव-समाज की अत्यंत महत्वपूर्ण प्रथा या समाजशास्त्रीय संस्था है। यह समाज का निर्माण करने वाली सबसे छोटी इकाई-परिवार-का मूल है। यह मानव प्रजाति के सातत्य को बनाए रखने का प्रधान जीवशास्त्री माध्यम भी है। साथ ही यह एक वंश को आगे बढ़ाने में भी अपनी पूरी भागीदारी निभाने का दस्तूर अदा करता है। परंतु आज के परिवेश में विवाह के मायने पूर्णत: बदलते जा रहे हैं। एक संस्कार जो मनुष्य जीवन चक्र का आधार हुआ करता था वह भी अब लोभ , आकर्षण,मोह,माया अहंकार, ईर्ष्या की बलि चढ़ रहा है। विवाह जहां दो परिवार अपने बच्चों को एक बंधन में बांध कर एक नए परिवार के निमार्ण की नींव रख एक सभ्य समाज के स्वरूप में अपना योगदान दिया करते थे, समाजिक कुप्रथाओं, पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने इस व्यवस्था का स्वरुप इतना भंयकर कर दिया कि अब इस व्यवस्था के बारे में सोच कर ही रुह कांप जाती है। प्राचीन काल में संसाधन सीमित थे तो महत्वाकांक्षाएं भी सीमित थी सब अपने अपने स्वरूप योग्यता क्षमता के अनुसार सामाजिक व्यवस्था एवं परंपरा का निर्वहन किया करते थे मैं ये नहीं कहुगी कि प्राचीन समय में विवाह व्यवस्था सही थी क्योंकि कमियां उनमें भी थी और शायद उन कमियों खामियों की वजह से ही मनुष्य जैसे जैसे आधुनिकता की और प्रगतिशील हुआं उसने समाजिक प्रथाओं में भी हस्तक्षेप कर अपने सहुलियत के अनुसार हेर फेर करना प्रारंभ कर दिया और उसी का परिणाम है विवाह का बदलता स्वरूप और यह स्वरुप इतना बदल गया कि पहले इस व्यवस्था में कुछ कमियां थीं और बहुत सी अच्छाई भी सम्मिलित हुआ करती थी परंतु अब अच्छाई खोजने पर भी नहीं मिलती बस होड़ है इस व्यवस्था को चलाये रखने की, फिर इसके परिणाम जब भयानक आते हैं तो इसके दोषारोपण के लिए जिम्मेदार तो है ही वे लोग जिनकी स्वीकृति थी इस व्यवस्था को आगे बढ़ाने में, प्रथम दोषारोपण में वो दो प्राणी आते हैं जो कर्णधार के रूप में चुने गए थे जिन्हें रिश्तों के रूप में पति और पत्नी की संज्ञा दी गई क्योंकि विवाह बंधन के बाद इस व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाये रखने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी इनकी है और यदि ये इस व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में असफल होते हैं तो जिसका प्रभाव इस रिश्ते में ज्यादा होगा वो तो सही है इस असफलता की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उस कमजोर कड़ी की होगी जो जो दुसरी कड़ी पर निर्भर होगी, अगर दोनों कड़ियां अपनी कमियों को स्वीकार करने से इन्कार कर दे तो इन कड़ियों को जोड़ने वाले समुह यानि परिवार की होगी, परिवार उस माध्यम को दोष देगा जिसने ये बंधन जुड़वाने में अपनी अहम् भूमिका निभाई थी और वह भी दोष स्वीकार करने से इन्कार कर देता है तो भाग्य और विधाता तो है ही जिसने इस सृष्टि की रचना की और वह इस दोषारोपण में अपनी सहमति या असहमति देने प्रत्यक्ष आ भी नहीं सकता तो पूरा दोष अंत में उस परमात्मा पर मढ़ कर व्यक्ति निश्चित होकर स्वयं को सही साबित कर देता है। पति पत्नी का रिश्ता साईकिल के समान है क्योंकि समाज में तो पुरुष की वर्चस्वता थी उसका अहंकार कैसे महिला को अपने बराबर खड़ा कर सकता था। और विकास हुआ साइकिल के स्थान दो पहिया तीन पहिए वाहनों ने लिया परिवार और पति पत्नी ने भी विकास किया संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने लिया और पति पत्नी ने भी आगे पीछे की स्थिति को आपसी सहमति से स्वीकार किया साथ ही तीन पहिए के दौर में पुरुष रुपी पति ने महिला रुपी पत्नी में अपने प्रति जिम्मेदारीयों में कमी महसूस कर तीसरे पहिए के रूप में एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर अपना कर अपने गृहस्थ जीवन की गाड़ी को सुचारू रूप से चलाने का प्रयास किया समय बदलता गया महिला भी पुरुष शक्ति से कम नहीं उसने भी अपनी

बुद्धि का प्रयोग करना प्रारंभ किया और अब तक शोषित होने के पश्चात अपना उग्र प्रदर्शन प्रारंभ किया जब जहां उसे अवसर मिला उसने भी पुरुष को निचा दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अब तीन पहिए वाहनों के स्थान पर चार पहिए आ गए और पति पत्नी में भी इस सहमति पर सामंजस्य स्थापित हो ने लगा कि एक दुसरो की कमियों की पूर्ति बाहरी सोर्स से पूरी कर समाज को अपने सफल वैवाहिक जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। शुक्र है अभी एरोप्लेन सभी की क्षमता से दूर है अन्यथा पति पत्नी के रिश्ते के स्वरूप की कल्पना पता नहीं कौन सा रुप लेती। बदलते परिवेश के साथ ये बदलाव यहां पर ही नहीं रुकते ,विवाह जिसे प्रत्येक धर्म संस्कृति में सदैव एक उच्च स्थान प्राप्त है आध्यात्मिक दृष्टि कोण से,धार्मिक मान्यता से, समाजिक मान्यता में भी और भौतिक दृष्टि में भी यह एक ऐसी परंपरा या व्यवस्था है जिसको सही दिशा में समझा जाए तो जीवन के विभिन्न उतार चढ़ाव को एक सुखद अहसास प्रदान करती है। या यूं कहें विवाह समाज स्थापित की वो प्रारंभिक कड़ी है जिसकी नींव डमाडोल होने से समाज संस्कृति व्यवस्था भी अस्त-व्यस्त होना लाजिमी है विवाह बंधन में बंधने के बाद पति पत्नी नामक रिश्ते की जिम्मेदारी होती है परिवार को विस्तृत करने की और समाजिक कार्यों में अपना योगदान देने की परंतु वर्तमान समय में विवाह बंधन में तो लोग बंध रहे हैं क्योंकि ये परंपरा है और समाजिक प्राणी होने के नाते यह प्रत्येक की नैतिक जिम्मेदारी है परंतु विगत वर्षों से यह रिश्ता भी स्वार्थ, अहंकार,मोह, ईर्ष्या,लोभ की बलि चढ़ रहा है पहले कुछ कुप्रथाओं की वजह से यह बंधन अपना अस्तित्व खोने को मजबूर था अब वैयक्तिक स्वार्थ और न समझी ने इसे तार तार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी । जीवन को संवारने संजोने वाले रिश्ते में भी अब कोई सांवेगिक भावना की अनुभूति होती नहीं दिखती, बस एक परंपरा को निभाने के लिए ही यह बंधन रह गया है क्योंकि विवाह न होने की स्थिति में या टुट जाने की स्थिति में लोग क्या कहेंगे यह डर सबसे ज्यादा है इसलिए जरुर कोई कमी होगी इसलिए विवाह नहीं हुआ कुछ तो खोट होगी इसलिए विवाह टुट गया, किसी को स्वतंत्रता पसंद है तो किसी के लिए कैरियर महत्वपूर्ण है कुछ शिक्षित युवा ने अगर अपनी शर्तों पर जीवन साथी चयन करने का प्रयास किया भी इस उम्मीद से की अब तक जिन कारणों से विवाह असफल हो रहे हैं उन विसंगतियों का प्रभाव उनके वैवाहिक जीवन पर न पड़े और वो भी अपने जीवन साथी के साथ सुख पूर्वक जीवन यापन कर सकें और इस प्रयास में अगर विवाह में देरी हो जाए तो यही समाज के ठेकेदार ऐसे ऐसे उदाहरण ऐसे ऐसे ताने ठिकरे प्रस्तुत करते हैं कि कुछ तो हालत से समझोता कर लेते हैं और कुछ विवाह जैसे सम्बंध से ही दुरी बना लेते हैं। आजकल विवाह को लेकर एक अलग ही धारणा देखने को मिल रही अब विवाह क्योंकि विवाह तो आवश्यक है उसके बिना जीवन अधूरा है तो कुछ लोग इसलिए विवाह करना चाहते हैं क्योंकि गृहस्थ जीवन में होने से उन्हें एक सभ्य नागरिक होने का खिताब मिल जाता है उनके आचरण चाहे कितने भी अनैतिक हो समाज में उन्हें सम्मान की दृष्टि से ही देखा जाएगा,दुसरा कारण पति या पत्नी जिसकी भी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी उससे दुसरे का जीवन में भी समृद्धि आ जाएगी, किसी को घर में खाने बनवाने के लिए पत्नी चाहिए तो किसी को वंश बढ़ाने के लिए, किसी को शापिंग के लिए पति चाहिए तो किसी को बाड़ी गार्ड के लिए जितने लोग उतने अलग अलग उद्देश्य विवाह बंधन में बंधने के लिए और इन महत्वाकांक्षाओं से विवाह का असली मकसद तो लुप्त ही हो गया और ऐसी महत्वाकांक्षाऔ के चलते ऐसे रिश्तों की डोर भी ज्यादा समय तक बंधी नहीं रह सकती जिसकी भी उम्मीद टुटी उसी पल तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और परिणाम होता है समाज को दिखाने के लिए मजबूरी में रिश्ते का बोझ जीवन भर उठाना या विवाह विच्छेद क्योंकि लोग क्या कहेंगे इस डर ने रिश्तों की पहचान तो छीन ली जीवन से सुकुन भी बलि चढ़ने को तैयार हैं।

हेल्पलाइन सोसाइटी ने लगाया निशुल्क चिकित्सा शिविर

■ 475 मरीजों की हुई जांच
■ विधायक हरिप्रकाश वर्मा ने किया उद्घाटन

लोक पहल

शाहजहांपुर। हेल्पलाइन सोसाइटी की ओर से जलालाबाद के सत्य विद्या एग्रो फार्म, शिवपुरी में निशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया।शिविर का शुभारंभ जलालाबाद विधायक हरिप्रकाश वर्मा व डॉ किरण अग्रवाल ने किया।

रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के डायरेक्टर अशोक अग्रवाल एवं सीनियर डॉक्टर अमित सिंह के साथ उनकी 25 विशेषज्ञ चिकित्सकों और 30 पैरामेडिकल स्टाफ की टीम ने ग्रामीण क्षेत्र के वृद्ध, जवान, महिलाएं और बच्चों की जांच की और उचित परामर्श प्रदान किया, साथ ही उन्हें हेल्पलाइन सोसाइटी की ओर से निशुल्क दवाएं भी उपलब्ध करवाई गई। चिकित्सा शिविर में 390 से अधिक लोगों ने अपनी आंखों की जांच करवाई और चश्मे व आंखों की दवाएं प्राप्त की। इसके अलावा 11 व्यक्तियों का मोतियाबिंद का ऑपरेशन हेल्पलाइन सोसाइटी द्वारा निशुल्क करवाया जाएगा। 30 से

अधिक मरीजों का ईसीजी परीक्षण कर उनको उचित परामर्श व दवाइयां दी गई। शिविर में कुल 475 मरीजों की जांच की गई, जिनमें सामान्य रोग, हड्डी रोग, चर्म रोग, हृदय रोग, स्त्री रोग, और बाल रोग, समेत विभिन्न रोगों की जांच और परामर्श किए गए, और उन्हें परामर्श के बाद निशुल्क दवाएं प्रदान की गई। दिव्यांग लोगों को बैसाखी (वाकिंग स्टिक) तथा कान की मशीन प्रदान की गई। करीब 62 मरीजों के दांतों का उचित इलाज किया गया। इस मौके पर विधायक हरिप्रकाश वर्मा एवं ब्लाक प्रमुख महेश पाल सिंह ने संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

मेडिकल कैंप में हेल्पलाइन सोसाइटी के अध्यक्ष अशोक कुमार अग्रवाल, रामचंद्र अग्रवाल, सुरेश सिंघल, विनोद अग्रवाल, डॉ अनिल त्रेहन, अरुण खंडेलवाल, नरेंद्र त्यागी, रवि गोयल, विकास अग्रवाल, अभिनव ओमर, दिव्यांग सिंघल, अंकित सिंघल, राजेन्द्र गुप्ता आदि मौजूद रहे।

डा. रूपक श्रीवास्तव की पुस्तक को प्रकाशित करेगा उ.प्र. हिन्दी संस्थान

लोक पहल

शाहजहाँपुर। स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज के वाणिज्य विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. रूपक श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तक 'कोरोना व विकास की ज्योति' को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ प्रकाशित करेगा। संस्थान की प्रधान संपादक डा. अमिता दुबे का पत्र डा. रूपक को प्राप्त हुआ है जिसमे प्रकाशन हेतु संस्थान द्वारा अनुदान राशि की स्वीकृति दी गई है। संपादक सहायक श्याम सक्सेना ने बताया कि डा. रूपक श्रीवास्तव ने कोरोना काल में भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों को दी गयी आर्थिक सहायता व उनके उपयोग को बताया है। जिसमे भारत के प्रत्येक राज्य में कोरोना काल से अब तक हुए खर्चों की आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत की है। इस पुस्तक से छात्र

छात्राओ समेत शोध कर रहे शोधकर्ताओं को मदद मिलेगी। डा रूपक श्रीवास्तव ने अपनी इस सफ्लता का श्रेय मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिठाष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द व एसएस कालेज के सचिव डा. अवनीश मिश्रा, प्राचार्य प्रो. आरके आजाद व अपने गुरु वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो अनुराग अग्रवाल को दिया। प्रो. अनुराग अग्रवाल ने बताया पिछले कई माह से रूपक इस पुस्तक पर कार्य कर रहे थे। जिसे सरकार ने प्रकाशन की स्वीकृति देकर उनको प्रोत्साहित किया है।

महाराज अग्रसेन महोत्सव में प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

■ सांसद मिथिलेश कुमार, एमएलसी डा. सुधीर गुप्ता व महापौर अर्चना वर्मा ने किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। जय भारत महाराजा अग्रसेन स्मृति महोत्सव का समापन समारोह में जिले के टापर्स व अन्य प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद मिथिलेष कुमार, महापौर अर्चना वर्मा व एमएलसी डा. सुधीर गुप्ता ने आदर्श प्रधान अनिल गुप्ता एवं युवा प्रतिभा समीर खान को संस्था का सर्वोच्च सावित्री अलंकरण पुरस्कार से सम्मानित किया। साथ ही जिले के सीबीएसई यूपी बोर्ड एवं आईसीएसई बोर्ड के टॉपर्स वंशिका गंगवार, राहुल कुशवाहा, देवांश, माही गुप्ता, महाराज सिंह, अरनव अग्रवाल, आध्या यादव, एहसास सिंह, अनिकेत पांडे, शुभम पांडे को महाराजा अग्रसेन अलंकरण से सम्मानित किया तथा 100 से अधिक प्रतिभाओं को जय भारत अवार्ड से नवाजा गया।

एसएस कालेज के सभागार में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ महापौर अर्चना वर्मा ने महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा पर एवं जय भारत संस्था के अध्यक्ष राजीव कृष्ण अग्रवाल ने भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की श्रृंखला में लीड कॉन्वेंट, गुरु नानक कन्या हाई स्कूल, आकांक्षा हाई स्कूल, श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ, प्राथमिक विद्यालय जमालपुर, डॉ एम लाल पब्लिक स्कूल, आर्य महिला इंटर कॉलेज, ज्ञान कृष्ण पब्लिक स्कूल, बिहारी लाल विद्या मंदिर, बचपन प्ले स्कूल सहित नगर के एक दर्जन से अधिक विद्यालयों की शानदार प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। विशिष्ट सहयोग सम्मान तक्षशिला पब्लिक स्कूल, एसएस कालेज, लीड कॉन्वेंट एवं प्राथमिक विद्यालय जमालपुर को प्रदान किया गया। आयोजन में संस्था के महासचिव डॉ मयंक भूषण पांडे, रमन गुप्ता, शशि गुप्ता, ओमकार मनीषी, शोभित अग्रवाल, आयुष अग्रवाल, ललिता यादव, दिग्विजय सिंह, पूनम रानी, अंजलि अग्रवाल, रूबी अग्रवाल, पूजा अग्रवाल, सतीश शर्मा, संदीप शर्मा, रामाश्रय सक्सेना, कल्पना गुप्ता का विशेष सहयोग रहा। इस मौके पर रामचंद्र सिंघल, सुरेश सिंघल, डॉ अनुराग अग्रवाल, तराना जमाल, पराग अग्रवाल, राजीव अग्रवाल, सुनील मूर्ति अंचल आदि मौजूद रहे।

मेलों में छोटे दुकानदारों से भी करें खरीददारी मिलेगी आत्म संतुष्टि

शाहजहांपुर। नवरात्रि के साथ दशहरे के मेले भी चल रहे है। तरह तरह की दुकानें लगी हुई है जिनमे कई जरूरी सामान बिक रहा है। मेलो में कई निम्न तबके के लोग भी अपनी दुकानें फड़ व रेडी लगाए हुए है। इनके पास ज्यादा महंगा सामान तो नही हो है। बस इतना होता है की उसे बेंच कर अपने घर का खर्च निकाल सके। इनमे गुब्बारे वाले, कॉटन कैंडी वाले बांसुरी वाले, रेडी पर लगाने वाले मिट्टी के खिलौने वाले आदि बेचते है। जिनकी कीमत 10-50 तक होती है। सभी मेला जाने वाले महानुभावों से प्रार्थना है, जब मेला जाए तो इन लोगो से जरूर कुछ न कुछ खरीदे। इन्हे ज्यादा पैसो की जरूरत नही होती है, बस इतनी की इनका जीवन सही चल पाए। जब आप इनके पास से कुछ खरीदेंगे आपको एक अच्छी अनुभूति होगी। आपको भी मदद के साथ एक सुख प्राप्त होगा।

अगर कोई छोटा बच्चा या बच्ची खिलौना बेंचते दिखे तो उसे भी कुछ खिला पिला देना और संभव सहायता करके देखना। हम अनजाने में कितने ही व्यर्थ रुपए बर्बाद कर देते है। बस एक बार इनकी हेल्प करके देखिएगा। एक शांति एक आनंद मिलेगा–**यश स्टार्क।**

श्री देवी पूजा : राष्ट्रव्यापी महोत्सव इतिहास एवं महत्व

डा. विकास खुराना
इतिहासकार

भारत में देवी की उपासना उतनी ही प्राचीन है जितनी स्वयं हमारी सभ्यता। सैंधवकाल में हम लोगो को हजारों की संख्या में देवी प्रतिमाएं मिली हैं। हड़प्पा नगर में मिली मातृ देवी की प्रतिमा अलौकिक दृष्टि से अत्यंत ही सुंदर है। यह नगर देवी थीं। ऋग्वेद में शक्ति को अदिति कहा गया है जो समस्त ब्रह्मान्ड का आधार है। यह समस्त देवताओं, गन्धर्वों, मनुष्यों, असुरों तथा समस्त प्राणियों की माता हैं तथा पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं स्वर्ग में रहती हैं। ऋग्वेद में श्री भगवती अपने बारे में बताते हुए कहती है- 'मैं ब्रह्मान्ड की अधीश्वरी हूँ। मैं एक होते हुए भी नाना रूपों में विचरण करती हूँ। मैं सर्वथा स्वतंत्र हूँ। मैं किसी के अधीन नहीं हूँ। इस महा ग्रंथ में देवी प्राकृतिक शक्तियों की प्रतीक हैं जैसे-जंगल की देवी आख्यानी, नदियों की देवी सरस्वती, नैतिक चरित्र की देवी ऋतु। इनके संरक्षक रूद्र हैं। उत्तर वैदिक काल में देवी पूजा आर्थिक साधनों पर आधारित न केवल सिद्धि और धन की प्रदायिनी थी अपितु भूमि सम्बन्धी अधिकारों के कारण वे राजत्व की प्रतिपादक बनकर उभरी। 9वीं से 14वीं शताब्दी ईस्वी के बीच देवी को समर्पित उपनिषद रचा गया था। यद्यपि यह काल वैदिक कर्मकाण्डों से विरत होकर उपासना का महत्व प्रतिपादित करता था तथा बलि इत्यादि कार्यो से इसका निषेध था दूसरी ओर महात्मा बुद्ध की षिक्षा के फ लस्वरूप ब्राहम्णवादी

जटिल कर्मकाण्ड समाज से खत्म होने की कगार पर थे किन्तु देवी की उपासना इस कालखण्ड में भी अत्यधिक लोकप्रिय थी। इस समय महादेवी को सभी देवियों का प्रतिनिधित्व करने वाला बताया गया है। देवी उपनिषद तंत्र और शाक्त दर्शन परंपराओं के लिए महत्वपूर्ण पांच अथर्वशिरस उपनिषदों का हिस्सा है। उपनिषद में कहा गया है कि देवी ब्रह्म है और उनसे प्रकृति और पुरुष उत्पन्न होती हैं। वह आनंद और अ-आनंद, वेद और उससे भिन्न, जन्म लेने वाली और अजन्मा, और संपूर्ण ब्रह्मांड है। देवी की पूजा भारत के इतिहास के सभी कालखण्डों में लोकप्रिय रही। गुप्त युग तथा राजपूत कालखण्ड में देवी ही भारत की अराध्य शक्ति थी उनके ऊपर महापुराण के न केवल सृजन हो रहे थे बल्कि अनेक रूपों में उनकी उपासना विषिष्ट फल देने वाली थी। यही कालखण्ड था जब देवी महातम्य की रचना हुई, असुरों का संघार करने वाली दुर्गा माता सिंह पर बैठकर लोक कथाओं का हिस्सा बनी। दुर्गा पूजा भारत भर में प्रचलित त्यौहार है। विशेषकर यह बंगाल में मनाया जाता है किंतु पूरे भारत में यह समान रूप से लोकप्रिय हैदेवी के नौ रूपों को समर्पित नौ दिन सिद्धि प्रदान करने वाले होते हैइनका उद्देश्य राग से विराग की ओर, विकार से विकास की ओर, असत्य से सत्य की ओर, तम से ज्योति की ओर,और तामसी प्रवृत्ति से सद्गुणों की ओर-ले जाना है। इसके लिए जरूरी है तन और मन में समाए विकार को विदाई देना। तन-मन में जगह बना चुकीं व्याधि, राग-द्वेष को खुद से दूर करना। नवरात्रि पर मां दुर्गा के नौ दिन शक्ति उपासना के बीच आत्म संयम से इच्छाशक्ति को मजबूत करने का असल मकसद निहित है। आइए इसे आत्मसात करें और नवसंवत्सर व नवरात्रि पर सदबदलाव का संकल्प लें। भारत में देवी पूजा वैष्णवी, तंत्र, शैव तीनों ही रूपों में प्रचलित है। देश में इनकी विख्यात पीठें हैं यथा कलकत्ता में मां काली, आसाम में कामाख्या देवी, जम्मू में माता वैष्णवी, हिमांचल में नैना देवी इनके कुछ उदाहरण है।

वस्तुत: देवी पूजा अध्यात्म के क्षेत्र में अपने भीतर की ऊर्जा प्रस्फु टीकरण की प्रतीक हैं। अध्यात्म मानता है कि शिव के द्वारा जिस ऊर्जा के फ लस्वरूप सृष्टि की रचना की गई वहीं आदि शक्ति है। पुराण इसकी यह कहकर महिमा गाते हैं कि जो ऊर्जा रूपी देवी शरीर के मध्य, स्वास्तिक चिन्ह में, कल्याण रूप में प्रकट होती हैं उनको शत-शत बार नमन है। शारदीय नवरात्रि उत्सव की वेला में माता दुर्गा हम लोगों का कल्याण करें इसी शुभकामानाओं के साथ जय माता दी।

एसएस लॉ कॉलेज में मूटकोर्ट कार्यशाला का आयोजन

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में मूटकोर्ट कार्यशाला का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलनसे हुआ। कार्यशाला की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ जयशंकर ओझा ने की। प्राध्यापक प्रियंक वर्मा के निर्देशन में करूरता और जार कर्म के आधार पर विवाह-विच्छेद से संबंधित याचिका पर महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएं वंशदीप, निहारिका, सौम्या, सारिका, रोशनी, जान्हवी, नैंसी, सौरभ अवस्थी, निकिता, सौम्या, काजल, उत्कर्ष अवस्थी, सान्या परवीन आदि ने प्रतिभाग करते हुए अपनी प्रस्तुति दी।

इस मौके पर प्राचार्य श्री ओझा ने कहा कि एक अच्छा अधिवक्ता अपने वादों का अनुसंधान करते हुए विधियों के व्यावहारिक पहलुओं से उसे जोड़ने का प्रयास करता है जिसका उद्देश्य न्यायालय को संतुष्ट करते हुए पीड़ित को न्याय प्रदान कराना होता है।

प्राध्यापिका रंजना खंडेलवाल ने मूट कोर्ट की कार्यप्रणाली एवं इसकी बारीकियों के बारे में बताया। कार्यशाला का संचालन विजय सिंह ने किया। इस अवसर पर छात्र-छात्राएं व प्राध्यापक उपस्थित रहे।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।